Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एकोत्तर शत वचन

अनुवाद
राम अधार सिंह

0152,1:g,1
M8

निवेदिता प्रकाशन, मैसूर
1988

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

0152,1:9,L 8225
M8
Singh, Ram Adhar
Ekottar shat vachan

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनुवाद

राम अधार सिंह

निवेदिता प्रकाशन, मैसूर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मार्च 1988

मूल्य 15 रुपया

0152,1;9,1
M8

प्रकाशक : निवेदिता प्रकाशन
R4, मानस गंगोत्री क्वार्टर्स, मैसूर-570 006

JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 8225

मुद्रक : चारित्र प्रिंटर्स
8 क्रास, रामानुज रोड, मैसूर-570 004

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निवेदन

वीरशैव संतों के वचन कन्नड साहित्य के अमूल्य अंग हैं। बारहवीं शताब्दी के बीच इन संतों ने प्रायः हजारों ऐसे वचनों की रचना की है। मैंने इनमें से १०१ वचनों का चयन किया है और उनका अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराने का प्रयास कर रहा हूँ। अंग्रेजी, ओडिय और बंगला में अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं॥ स्पैनी और मलयालम के अनुवाद प्रकाशन के लिए तैयार हैं।

जब मैं यह सोच रहा था कि हिन्दी के अनुवाद के लिए किससे कहा जाय तो मुझे राम अधार सिह रीडर, भारतीय भाषा संस्थान को पाकर प्रसन्नता हुई। वे एक अच्छे विद्वान ही नहीं हैं, अच्छे लेखक भी हैं। मैंने हिन्दी और कन्नड के के विद्वानों से यह पता किया है कि उन्होंने वचनों का हिन्दी में बड़ा सुंदर अनुवाद किया है। अनुवाद यंत्रवत् और रूक्ष नहीं है, सरस और साहित्यिक हैं। यह कार्य उन्होंने बड़े आनंद के साथ किया है। इसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। इस क्षेत्र में उनके इस योगदान को कन्नड भाषी और विशेषकर वचनों के प्रेमी कृतज्ञता पूर्वक याद करेंगे।

श्री जगद्गुरु राजेन्द्र स्वामी जी के सदैव प्रोत्साहन और आर्थिक सहायता को हम आशीर्वाद की तरह लेते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंत में चारित्र प्रिंटर्स के श्री चंद्रशेखर और उनके सहकर्मियों को पुस्तक की उत्तम छपाई के लिए धन्यवाद देता हूँ।

मैसूर प्रभुशंकर
1 मार्च 1988

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आमुख

सदा सुलभ डॉ० प्रभुशंकर से बातचीत करने में अद्भुत आनंद मिलता है। उनकी हास्य व्यंग्य की प्रकृति उनके मानवीय गुणों को और भी उजागर करती है। परंतु लंबी बात चीत करने से यह स्वतः ज्ञात हो जाता है कि उनके हास्य व्यंग्य के पीछे गहरी विद्वत्ता और गहन चिंतन छिपे हुए हैं हालांकि वे किसी को भी अपनी विद्वत्ता या चिंतन का दु:ख नहीं देते। बात चीत के दौरान कभी कभी प्रभुशंकर जी कन्नड के एक दो वचनों की व्याख्या करते तो मन में ललक होती कि उन्हें पढ़ूँ और उनका हिन्दी में अनुवाद करूँ। वचन साहित्य भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। जब कभी वचनों को पढ़ने सुनने अवसर मिलता है मैं उनकी मार्मिकता से अभिभूत हो जाता हूँ। फिर जब एक दिन प्रभुशंकर जी ने १०१ वचनों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद की योजना के अंतर्गत हिन्दी के लिए मुझसे कहा तों मैं अपने पुराने लोभ का संवरण नहीं कर सका। फिर तो दो तीन महीने तक लगातार हम उन वचनों में लगे रहे। मेरा कन्नड का ज्ञान एक दम अल्प है, शून्य के बराबर है। प्रभुशंकर जी ने एक एक शब्द पढ़कर उसकी व्याख्या की फिर मेरे अनुवादों को सुना और उन्हें 'पास' किया। इस प्रकार अनुवाद पूरा हुआ। फिर भी यत्र तत्र शंका लगीं रही और उसके

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समाधान के लिए मैसूर विश्वविद्यालय के हिन्दी अध्यापक श्री तिप्पेस्वामी जी की सहायता लेनी पड़ी। जहाँ कहीं उन्हें लगा कि मूल और अनुवाद में अंतर है वहाँ सुधार किया गया। तिप्पेस्वामी जी पुराने मित्र हैं उन्हें धन्यवाद देना औपचारिकता होगी।

वचनों का अनुवाद करते समय मुझे कहीं कबीर मिले तो कहीं मीरा, कहीं नानक मिले तो कहीं दादू और रैदास। संतों का न कोई देश होता है न कोई भाषा। विचारों की इतनी ऊँचाई और भाषा की अनुपम सादगी पग पग पर मुझे मुग्ध करती रही। जीवन के इतने जटिल और गहन तथ्यों को इतनी सहजता और सरलता से व्यक्त करना इन महान् साधकों के लिए ही संभव था जिन्होंने अपनी साधना के द्वारा ज्ञान को पूर्ण रूप से पहचान लिया था। उनको हमारा सादर नमन है।

प्रभुशंकर जी को धन्यवाद देना कठिन समस्या है। अगर अधिक शब्द लिखूँगा तो वे नाराज हो जाएँगे, कम लिखूँगा तो मुझे खुशी नहीं होगी। तो उत्तम यही है कि उन्हें धन्यवाद ही न दिया जाय, इसलिए और भी कि वे अब बहुत अपने हो गये हैं।

मैसूर
1 मार्च 1988

राम अधारसिंह

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भाग—१

वचन साहित्य

कन्नड साहित्य का इतिहास लगभग 1500 वर्ष पुराना है। संस्कृत और तमिल को छोड़कर भारत की भाषाओं में कन्नड में ही प्राचीनतम साहित्य उपलब्ध है। कन्नड का वचन साहित्य विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है। इस साहित्य की किस वातावरण में सृष्टि हुई और इसके रचनाकारों के मुख्य गुण क्या थे इसका एक ख्यातिलब्ध साहित्यकार ने सुन्दर वर्णन किया है।

"कन्नड साहित्य की यात्रा करते समय हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचते है जब हमें एक आश्रम में पहुँचने जैसी आनंदमय अनुभूति होती है। हमें तत्व के अन्वेषकों और ऋषियों की दिव्यदृष्टि का आशीर्वाद मिलता है। हमारा हृदय इन ऋषियों के आदर्श जीवन और उच्च शिक्षाओं से पवित्र होता है। हमारी आत्मा के बंधन टूट जाते है और हमें मुक्ति की प्राप्ति होती है। इस शांत नीरव स्थल पर नगर के जीवन की दौड़धूप हमें परेशान नहीं करती और न तो राजदरबार की चकाचौंध हमारे ध्यान को हटाती है। प्राकृतिक शांति, परस्पर स्नेह, समानता की भावना और आश्रम की स्वतंत्रता

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यहाँ पूर्ण रूप से मिलती है। हमें आरण्यकों में जैसा उपनिषदों का दर्शन मिलता है। वैसा दर्शन हमें इन वचनों में भी मिलता है। सत्य की जिज्ञासा साहित्य बन जाती है. सत्य की खोज एक सिद्धांत बन जाता है और सब एक साथ मिलकर हमें अति अलौकिक आनंद प्रदान लाते हैं। यह नया उपनिषद् वचन साहित्य है और वचनकार ही इन नये उपनिषदों के सर्जक हैं।

यह सब ईसा की बारहवीं सदी में हुआ। अधिकांश वचनकार एक विशेष कल में उत्तर कर्नाटक के कल्याण नामक स्थान पर एक साथ रहते थे। उनमें से कई को सिद्धि की प्राप्ति हो चुकी थी, कुछ लोग सिद्धि की खोज में लगे थे। वे सभी जाति, लिंग और पेशे के अंतर को भूलकर एक ही साथ रहते थे और अपनी आंतरिक अनुभूति का आपस में आदान प्रदान करते थे। वे अपनी बात बड़ी साधारण कन्नड में कहते थे जिससे साधारण से साधारण व्यक्ति उसे समझ सके। उन्होंने अपने अनुभवों और संदेशों को पद्यमय गद्य में बद्ध किया है। वीरशैव संतों के लय युक्त पदों को, जो बहुधा कविता की तरह होते थे, वचन की संज्ञा दी गई है।

उन के उपदेशों के मुख्य तत्व वही हैं जिनका मनुष्य हजारों वर्षों से अनुभव कर रहे हैं और जिनके लिए अभीतक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधना करते आ रहे हैं फिर भी सफलता नहीं मिल पाई है। किंतु इन संतों को एक बात में पूर्ण सफलता मिलगई थी और वह है पूर्ण एकता। उनका मत है कि सांसारिक या आध्यात्मिक विषय कुछ भी क्यों न हो स्त्री और पुरुष सभी समान हैं। मंत्री ओर नाई दोनों में कोई भेद नहीं है। अंतर्पंक्ति-भोजन और अंतरजातीय विवाह का मुख्य उद्धेश्य पूर्ण एकता को स्थापित करना है। क्योंकि जो भी शिव के चिन्ह-लिंग को धारण करते हैं वे एक मत के होते हैं और इसीलिए एक समान हैं। यह अनोखीं बात थी कि इस संप्रदाय के सभी लोगों ने उस सिद्धांत का पूरा पूरा पालन किया।

इत महान् पुरुषों का एक अन्य मूल और आधारभूत सिद्धांत शारीरिक श्रम से संबंधित था। उसके अंतर्गत राजा हो या किसान, सबको अपने पसीने की कमाई से जीविका कमानी होती थी। कोई अपने पेशे को काम न करने का बहाना नहीं बना सकता था चाहे वह अध्यापक हो या मंत्री या कोषाध्यक्ष। सबको परिश्रम करना होता था। शिव के शरणों ने शारीरिक श्रम को कायक की संज्ञा दी उन्होंने घोषणा की कि कार्य ही स्वर्ग है, कार्य ही पूजा है।

इस कर्म दर्शन को समझने के लिए शरणों में से कुछ का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। उनमें सबसे महत्वपूर्ण

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बसवण्ण हैं। उन्हें बसवेश्वर कहकर सम्मान प्रदर्शित किया जाता है। कुछ अर्थों में वसवण्ण ही सभी शरणों में सर्वोपरि थे। कुछ लोगों की राय में वसवण्ण ही वीरशैव धर्म के प्रवर्तक थे। लेकिन उन्हें वीरशैव धर्म का सर्वश्रेष्ठ सुधारक मानना ही उचित होगा।

बसवण्ण—वीजापुर जिले के बागेवाडी गाँव के एक शैव ब्राह्मण परिवार में बसवण्ण का जन्म हुआ था। बागेवाडी एक अग्रहार था जिसमें वेद के ज्ञाता ब्राह्मण रहा करते थे। वे वेद, उपनिषद्, भागवतगीता ओर अन्य हिन्दू धर्म ग्रंथों के पंडित थे। मादीराज उनमें प्रमुख थे। उनकी पत्नी का नाम मादांबे थे। बसवण्ण इसी दंपति के पुत्र थे। उनके जन्म का निश्चित समय तो मालूम नहीं है परंतु 1131 ई० को उनके जन्म का समय मानना गलत नहीं होगा।

बसवण्ण ऐसे वातावरण में पले और वढ़े जिसमें वेदों का अध्ययन और वैदिक संस्कार फैले थे। पर उनकी उन में कोई रुचि नहीं पैदा हो सकी। उनका मन आध्यात्मिकता से भरा था। इस के बाह्य रूपों और अनुष्ठानों पर उनका कोई विश्वास नहीं था। उनकी आध्यात्मिकता का अर्थ था दृढ़भक्ति। समय आने पर पिता ने बसवण्ण का उपनयन संस्कार पूर्ण विधिविधान के साथ संपन्न किया। परन्तु संस्कार के अनुष्ठानों ने बालक बसवण्ण का मन वितृण्णा से भर दिया।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसके मन में भक्ति का स्रोत इस प्रकार बह रहा था कि उसे संध्या वंदना जैसे आचार और नित्यकर्म व्यर्थ लग रहे थे। एक कवि ने ठीक ही कहा है 'उन्होंने यज्ञोपवीत को जाल की तरह तोड़कर फेंक दिया।' तत्पश्चात् उन्होंने अपना पैतृक घर छोड़ दिया।

बड़ी बीहड़ यात्रा के बाद बालक बसवण्ण कृष्णा और मालप्रभा नदियों के संगम—कूडलसंगम पर पहुँचा। फिर तो कूडल संगम देव उसकी उपासना के अवलंब और इष्टदेव मिल गये। जैसे जैसे उनकी आयु बढ़ती गई उनकी भक्ति में विकास होता गया। ऐसा लगता है कि वे 10-12 वर्ष तक धार्मिक तपस्या में लीन रहे। उनकी बुद्धि कुशाग्र थी। उनका चरित्र सोने की तरह तपा हुआ था। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि उनका यश दूर दूर तक फैल गया।

चालुक्य राजवंश के राजा बिज्जल मंगल-बेप्धे नामक रियासत पर राज्य करते थे। बसवण्ण के चाचा बलदेव उनके कोषाधिकारी थे। बसवण्ण के बढ़ते हुए यश की बात सुनकर बलदेव ने उन्हें अपने पास बुला लिया और उन्हें खजाने में नौकरी दिला दी। पहले बसवण्ण ने बलदेव की पुत्री गंगांबिका से विवाह किया। उसके बाद किन्ही अज्ञात कारणों से मंत्री सिद्धरस की पुत्री नीलांबिका से विवाह कर लिया।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक दो वर्ष बाद बलदेव की मृत्यु हो गई। तब तक बसवण्ण अपनी ईमानदारी और स्वामिभक्ति के लिए प्रसिद्ध हो गये थे। इसलिए उन्हें कोषाधिकारी के रूप में पदोन्नति मिल गई।

इस समय एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक परिवर्तन हुआ। बिज्जल जो अब तक कल्याण के चालुक्य राजवंश के जागीरदार ही थे स्वयं साम्राट बन गये। इसलिए कल्याण उनकी राजधानी बन गया। 1155-56 के आस-पास बसवण्ण बिज्जल के साथ कल्याण चले गए।

परंतु बसवण्ण की राजनीति औग प्रशासन कार्य में कोई अभिरुचि नहीं थी। वे मानवमात्र में पूर्ण विश्वास करते थे। उनकी संपूर्ण भक्ति हर को समर्पित थी। उनकी संपूर्ण श्रद्धा शरणों को अर्पित थी। जाति व्यवस्था के प्रति उनके मन में तीव्र घृणा थीं। किसी वर्ग को भी अस्पृश्य मानना उनकी विवेक पूर्ण बुद्धि के लिए लज्जास्पद बात थी। वैदिक अनुष्ठानों के प्रति उनके मन में पूरी वितृष्णा थी। वैदिक यज्ञ, जिसमें पशुबलि होती है, के विषय में उन्होंने निम्न मार्मिक वचन कहा है —

ओ छाग! देंगे बलि तुम्हें शब्द शब्द पर
इसलिए रोओ तुम
जाकर रोओ सामने उनके

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पढ़े हैं जिन्होंने सारे वेद
जाकर रोओ सामने उनके
पढ़े हैं जिन्होंने सारे शास्त्र
कूडल संगमदेव करेंगे उपाय उचित
तुम्हारे इस क्रंदन का ।

बसवण्ण जो उपदेश देते थे, उसका स्वयं पालन भी करते थे । अपने सिद्धांत पर अमल करनेवाले इस महापुरुष के दर्शन के लिए ख्यांति लब्ध और ख्याति की प्राप्ति के लिए प्रयास करनेवाले सभी आने लगे । उनमें महान् संत ज्ञानी अल्लामाप्रभु, त्याग की मूर्ति महादेबी अक्का, कर्मयोगी सिद्धराम और अन्य पहुँचे हुए संत थे । उन्होंने बसवण्णा के क्रांतिकारी दृष्टिकोण का स्वागत किया और उसे अपनाया । वे साथ बैठकर आध्यात्म ज्ञान की चर्चा करते थे, एक पंक्ति में भोजन करते और आपस में विवाह करते थे ।

समाज के निम्नतम वर्ग के लोगों के लिए कियेगये बसवण्ण के कार्यों का तथा कथित उच्चजाति के लोगों ने घोर विरोध किया । ईर्ष्या के कारण कुछ लोगों ने बिज्जल से उनके विरुद्ध झूठी कहानियाँ कहना शुरु किया । पहले उन्होंने आरोप लगाया कि बसवण्ण राजकीय कोष को लूट रहे हैं, उन्होंने बड़ी रकम हड़प ली है और उसी से हज़ारों तथा कथित शरणों को खिला-पिला रहे हैं ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपने एक वचन में बसवण्ण ने इन भित्तिहीन आरोपों का जोर से खंडन किया है :—

डरता नहीं मैं रेंगते सांप से,
डरता नहीं मैं आग की लपट से,
डरता नहीं मैं खड्ग की तीक्ष्ण धार से।
डर है मुझे केवल एक का और
केवल एक से
परस्त्री और परधन से।
रावण और कौरव पूर्वकाल में
डरे नहीं उनसे।
उनकी हुई क्या नियति सोचो जरा।
इसलिए हे कूडलसंगमदेव
डरती हूँ मैं उनसे।

वे ऐसे निम्न प्रवृत्ति के व्यक्ति नहीं थे जो नौकरी या पद के जाने के भय से राजा के समक्ष अपने को गिराते।

उसके बाद बसवण्ण के विरोधियों ने उनके विरुद्ध एक दूसरा जबर्दस्त आरोप लगाया। उन्होंने शिकायत की कि वे शहर के परिया लोगों की बस्ती बसा रहे हैं और इस प्रकार उच्च जाति के लोगों को अपवित्र कर रहे हैं। उन्होंने बिज्ज़ल के कान भरे कि बसवण्ण परिया लोगों के घरों में जाते हैं और वहाँ से विना स्नान किए और शुद्ध हुए ही

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राज-दरबार में आ जाते है। परन्तु बिज्जल ने इन शिकायतों को अनसुना कर दिया। बसवण्ण एक जाति-रहित और वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होंने अपने विरोधियों की निरंतर कुत्सा पर ध्यान नहीं दिया। बाद में उन्होंने एक बड़ा क्रांतिकारी कदम उठाया। उन्होंने मधुरस नामक ब्राह्मण की कन्या का विवाह हरलय्या नामक अछूत से करवा दिया।

इस घटना से समाज में एक विस्फोट सा हो गया। ब्राह्मण कन्या का अछूत से विवाह—यह तो असहनीय व्यापार था। इससे तो सारा सामाजिक ढाँचा ही हिल गया। लोगों ने राजा से शिकायत की। यह आशंका व्यक्त की कि जातियों के इस प्रकार मिलने से तो देश ही बरबाद हो जाएगा। राजा वर्णाश्रम धर्म की रक्षा के लिए वचन-बद्ध थे। वे ऊहापोह में पड़ गये। अंत में उन्होंने एक बड़ा कठिन निर्णय लिया। मधुरस और हरलय्या को मृत्युदंड की सजा दे दी। इससे सारा शरण-समुदाय क्रोध में पागल हो गया। इस अवसर का लाभ उठाकर या तो बिज्जल के राजनैतिक विरोधियों ने या क्रुद्ध शरणों ने उनकी हत्या कर दी। इसके बाद सभी शरणों ने कल्याण छोड़ दिया। वे इधर उधर बिखर गये।

ये घटनाएँ 1167-68 के आस-पास घटीं। इस आन्दोलत के थोड़ा पहले या बाद में बसवण्ण ने घोर वितृष्णा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में भर कर कल्याण छोड़ दिया और कूडलसंगम चले गये। वहीं पर उन्होंने नश्वर शरीर त्याग कर दिया।

अपने वचनों में बसवण्ण ने कूडल संगम देव का उपनाम दिया है। इस उपनाम से लगभग 1200 पद मिलते हैं। बसवण्ण का हृदय मूलतः काव्यमय था अतः उनके अधिकांश वचन काव्यमय हैं। ईश्वर के प्रति अपनी उत्कट लालसा को उन्होंने मालोपमा के द्वारा निम्न वचन में व्यक्त किया है —

चकोर को चिन्ता है चन्द्रमा के प्रकाश की,
अंबुज को सूर्य के उदय की चिंता है।
भ्रमर को चिंता है परिमल के मधु की
मुझे हे कूडल संगमदेव तुम्हारी ही चिंता है।

निम्न पद में उनकी प्रगाढ़ भक्ति का दर्शन होता है। उसमें एक अद्भुत रूपक है और पद श्लेष से समाप्त होता है।

शब्दों में भरकर नाम का अमृत,
नयनों में भरकर तुम्हारी मूर्ति,
मन में भरकर तुम्हारी स्मृति
कान में तुम्हारी कीर्ति भरकर,
कूडल संगमदेव ! चरणकमल पर तुम्हारे
समर्पित भ्रमर हूँ मैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निम्न पद में बसवण्ण ने मिथ्या से पूर्ण शरीर ओर सांसारिक मन की तुलना गृहस्वामी विहीन गृह से की है—

गृहस्वामी घर में हैं या नहीं ?
घर की चौखट पर उगी घास, भीतर है धूल ही धूल
गृहस्वामी घर में हैं या नहीं ?
शरीर में भरी मिथ्या, मन में विषय भरा
हे कूडल संगम देव ।
गृहस्वामी घर में हैं या नहीं ?

छोटी छोटी पंक्तियों में भी वे अत्यन्त गहन और गूढ़ अर्थ भर देते थे । उसके कुछ उदाहरण नीचे हैं —

बावी को यदि पीटोगे, क्या साँप मरेगा उससे ?

* * *

कूडल संगमदेव ! मुझ पर कृपा करेंगे
या नहीं, यही चिंता
मेरे लिए सोने को शय्या है
ओढ़ने को चादर हैं ।

बसवण्ण के वचन मुक्ता के हार की तरह है । यद्यपि शरणों में उन्हें उच्चतम स्थान मिल चुका था, फिर भी उन्होंने कहा 'कोई मुझ से छोटा नहीं है । शरणों में कोई बड़ा नहीं है ।'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महादेवी अक्का :

शरणों ने जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह आध्यात्मिक साधना में भी स्त्री और पुरुषों में समानता दिखाई थी। महादेवी अक्का इसकी सबसे ज्वलंत उदाहरण है।

महादेवी अक्का कन्नड की सर्व प्रथम कवयित्री है। वे कन्नड प्रदेश की प्रथम रहस्यवादी महिला भी है। उनके माता-पिता, जन्म या लालन-पालन के विषय में कोई इतिहास नहीं मिलता। यह भी मालूम नहीं कि उनका विवाह हुआ था या नहीं। उनके विषय में जो भी कहा जा सकता है वह उनके अपने वचनों, उनके समकालीन वचनकारों के वचनों और बाद के इतिहास-कारों के लेखन के आधार पर ही। उनसे उनके जीवन के विषय में नीचे लिखी बातें कही जा सकती हैं —

शिमोगाजिले में वल्लीगावे के निकट उदुतदी गॉव में महादेवी अक्का का जन्म हुआ था। एक परंपरा निर्मला और सुमति को उनका माता-पिता बताती है तो दूसरी अधिक प्रचलित परंपरा के अनुसार उनके पिता ओंकारशेट्टी थे और माता गंगम्मा। दोनों की शिव में अपार भक्ति थी। महादेवी के मन में भी वचपन से ही शिव के प्रति प्रगाढ भक्ति थी। भक्ति के साथ उनके मन में संन्यास की भावना भी बढ़ती रही। सोलह वर्ष की आयु तक पहुँचते पहुँचते वे अपार सोन्दर्य की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामिनी हो गईं। वहाँ की जागीर के प्रमुख कौशिक ने इस अलौकिक सुन्दरी को देखा और उससे विवाह करने का निर्णय कर लिया। परंतु महादेवी ने तो अपना पति चुन लिया था। वे भगवान शिव के साथ विवाह के लिए कृतसंकल्प थीं किसी मनुष्य के साथ नहीं। उनके इस दृढ़ संकल्प का दर्शन निम्न पद में होता है।

मृत्यु नहीं है न नाश जिसका
वैसे सुन्दर से हो गया है मुझे प्यार
अंत नहीं जिसका और न शून्य है
स्थान नहीं जिसका और चिन्ह भी नहीं
वैसे सुन्दर से हो गया है मुझे प्यार ओ माँ!
जन्म नहीं जिसका, जिसको न भय है
उस निर्भय सुंदर से हो गया है मुझे प्यार।
जिसका कोई कुल नहीं और कोई सीमा नहीं
इस सीमारहित सुन्दर से हो गया है मुझे प्यार
जब सुन्दर चन्नमल्लिकार्जुन ही
हैं पति मेरे
अन्य मर्त्य पतियों को, नाश होता जिनका
झोंक दो चूल्हे में।

लेकिन महादेवी का यह संकल्प राजाज्ञा के सामने टिक न सका। उन्हें अपना कोई भय नहीं था परंतु अपने माता-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पिता के ऊपर आने वाले संकट का उन्हें आभास हुआ। उन्होंने बड़ी अनिच्छा से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

वे महल में तो आगई पर महल का जीवन उन्हें रास नहीं आया। कामदेव को भस्म करने वाले शिव को अपना पति मान लेने के बाद सांसारिक पति के साथ पत्नी की तरह रहना और उससे शारीरिक संवन्ध रखना उनके लिए असंभव और अत्यन्त घृणास्पद था। अतः अक्का महल से भाग गई। उन्होंने जंगल में शरण ली। महल छोड़ने के साथ ही साथ उन्होंने राजकीय वस्त्राभूषण भी त्याग दिया और निर्वस्त्र रहने लगीं। उन्हें यह सहन नहीं हो सका कि अपनी राजकीय शक्ति के वल पर कोई उनके शरीर का दुरुपयोग करने की चेष्टा करे। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि उन्होंने प्रभु चन्नमल्लि-कार्जुन का दैविक तेज ही पहन लिया है, फिर सांसारिक वस्त्राभरण का उनके लिए महत्व नहीं था। उनकी इस दृढ़ धारणा का प्रमाण निम्न पद में मिलता है —

हाथ धन तो ले सकता है कोई
पर शरीर का धन ले सकता है क्या ?
वस्त्र आभूषण छीने जा सकते है बल से
जो निर्वाण ढँके है मुझ को
कोई छीन सकता है बल से क्या ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छोड़ दिया है लज्जा का भाव
पहन लिया प्रकाश चन्नमल्लिकार्जुन का
अरे मूर्ख ! वस्त्र या आभूषण का
बंधन फिर क्या उसे ?

यौवन के प्रारंभ में ही अनुपम सौंदर्य की स्वामिनी महादेवी जब वन में चली गई तो उनके मित्रों और शुभेच्छुओं ने उनसे अनेक प्रश्न किए। उनकी जीविका कैसे चलेगी ? वे कहाँ सोयेंगी ? कौन उनके सतीत्व की रक्षा करेगा ?

इन सभी प्रश्नों के लिए महादेवी का उत्तर था—

यदि भूख लगे तो है भिच्छान्न
यदि प्यास लगे
तो हैं कूप, तालाब और नाले ।
सोने के लिए हैं भग्न मंदिर
चन्नमल्लिकार्जुन ! आत्म संग के लिए तुम हो ।

इस प्रकार की साहसी और प्रबुद्ध महिला को मात्र इसलिए कि वे अतीव सुंदर नारी थीं अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । परंतु उन्होंने इन पर कोई ध्यान नहीं दिया । वन में आध्यात्मिक साधना करने लगीं । परंतु वन का एकाकीजीवन उन्हेंकठिन लगने लगा । इसलिए वे कल्याण की यात्रा पर चली गईं । उन दिनों कल्याण बड़े धार्मिक उत्साह का केन्द्र था । अल्लामा, बसवण्ण, सिद्धराम और अन्य प्रबुद्ध संतों की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सत्संगति में रह कर महादेवी अपनी आध्यात्मिकता का विकास करना चाहती थीं। लेकिन शरणों की मंडली में प्रवेश प्राप्त करने में उन्हें बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी।

यौवन का प्रथम चरण, अप्रतिम सौंदर्य, पूर्ण रूप से निर्वस्त्र, केवल लहराते बालों से गुह्यांग आच्छादित कर रक्खा था। क्या उनमें शरीर और यौवन की चेतना एकदम समाप्त हो गई थी। क्या उन्हें इन्द्रियों के निग्रह में सफलता मिल गई थी? इसके लिए शरण के अग्रणी लोगों ने उनकी एक बडी कठिन परीक्षा ली। उनका मन आध्यात्मिकता में परिपक्व हो गया है या नहीं इसे जानने के लिए उन्होंने किन्नरी बोम्मय्या नामक एक सुन्दर युवक शरण को उन के पास प्रलोभन दिखाने को भेजा।

परंतु जो युवक महादेवी की परीक्षा लेने आया था स्वयं लुब्ध हो गया। उनके अलौकिक सौंदर्य ने उसे चकाचौंध में डाल दिया। उसका संकल्प डगमगा गया। उसने बड़े प्रयत्न से अपने को दबाया और अपने आप से कहा —

"अगर उसे परमात्मा के अनुग्रह में ही परितोष मिल गया है तो मैं अपने को उसके सामने झुका दूँगा। मैं उसे अपना गुरु, अपनी माँ मानूँगा। परंतु यदि लगा कि उसे स्वयं की, काम की और संकोच की चेतना है तो मैं उसे अप्रतिम सौंदर्य

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाली, पर साधारण स्त्री मानूँगा। उससे प्रणय निवेदन करूँगा और उसे अपनी पत्नी बनाऊँगा।"

महादेवी से मिलने पर बोम्मय्या उनके आध्यात्मिक तेज से चमत्कृत हो गया। अक्का ने अपने मन से शरीर और काम जीवन की सारी चेतना मिटा दी थी और मनोविकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली थी। अपने मन और आत्मा को प्रभु मल्लिकार्जुन में मिला दिया था। उनकी यह अवस्था देखकर बोम्मय्या उनके चरणों पर गिर गया। इस प्रकार महादेवी ने न केवल स्वयं पर ही विजय प्राप्त की अपितु बोम्मय्या को भी काम की माया से बचाया। बोम्मय्या ने अपने इस अनुभव का वर्णन बड़ी सुंदर उपमा से किया है —

महालिंग त्रिपुरांतक की उलझी
रस्सी को सुलझा दिया तुमने
बाघ की ज़ीभ से चाटा आया बाहर
तुम्हारी कृपा से।

वह स्थान जहाँ अल्लामा प्रभु, बसवण्ण और अन्य शरण एक साथ बैठते, विचार-विनिमय करते या प्रवचन करते, 'अनुभव मंडप' के नाम से जाना जाता था। मंडप में प्रवेश पाने के बाद भी अक्का की कठिनाइयों का अंत नहीं हुआ। अल्लामा प्रभु ने सोचा कि शरण गोष्ठी में प्रवेश के पूर्व महादेवी अक्का

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की आध्यात्मिक अनुभूतियों को जानने के लिए उनकी कठिन परीक्षा लेनी चाहिए। उन्होंने बड़े पैने सवाल किये—"तुम वस्त्र क्यों नहीं धारण करती ?"

इसके पहले कि महादेवी इस प्रश्न का उत्तर दें बसवण्ण ने उनकी तरफ से इसका उत्तर दे दिया। उन्हें देखते ही बसवण्ण के मन में उनके प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी। उन्हें लगा जैसे महादेवी उन्हें जन्म देनेवाली माँ हैं। अल्लामा के प्रश्न का उत्तर था।

'जो अरूप में भक्ति रखते हैं क्या उन्हें शरीर का कोई बन्धन है ? जो मन रहित की उपासना करते हैं क्या उन पर अहंकार का कोई बंधन है ? जो नग्न ईश्वर को प्यार करते हैं उनके लिए कौपीन का बंधन क्या है ?'

लेकिन अल्लामाप्रभु छोड़ने वाले नहीं थे। उन्होंने पूछा :-

'ओ बहन ! तुम कहती हो ईश्वर तुम्हें प्यार करता है और तुम ईश्वर को प्यार करती हो। इसका अर्थ क्या है ? अगर तुम्हारी भावनायें पवित्र हैं तो वस्त्र फेंक देने के बाद भी अपने शरीर को अपने केशों से क्यों ढकती हो ? ऐसा करके तुम केवल यह सिद्ध करती हो कि तुम्हारे भीतर कहीं कहीं न लज्जा की भावना वर्तमान है। ऐसे व्यवहार को गोहेश्वर लिंग की स्वीकृति नहीं मिलती।'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अक्का ने बड़ा मुँहतोड़ जवाब दिया :—'अगर अंदर का फल पूरा पका नहीं होता तो बाहर के छिलके सूखते नहीं। (इसका मतलब साफ था कि अगर मस्तिष्क पूरा परिपक्व नहीं हुआ तो उसके शरीर से वस्त्र यूँ ही नहीं गिरते।) मैंने काम के चिन्ह को अपने केश से इसलिए छिपाया है कि मुझे डर था इसको देखकर आपको पीड़ा होगी। यह आप में घृणा क्यों पैदा कर रहा है? ओ मेरे बंधु! जिस स्त्री ने अपने आपको भगवान चन्नमल्लिकार्जुन को समर्पित कर दिया है उसे और मत चिढ़ाओ।' अल्लामा इसको सुनकर प्रसन्न हुए होंगे। पर प्रश्न पूछते रहे। संभवतः अनुभव मंडप के शरणों के समक्ष वे महादेवी की आध्यात्मिक श्रेष्ठता को प्रदर्शित करना चाहते थे। अतः उन्होंने पूछा :-

'हे बहन! तुम्हारा एक रूप है परंतु तुम कहती हो कि तुम उस अरूप से मिल गई हो। इसका अर्थ क्या है?'

अक्का का उत्तर उनके आध्यात्मिक अनुभव के उच्चतम शिखर पर पहुँचने को सिद्ध करता है। उन्होंने कहा :—

पिघले घी में एवं जमे घी में
क्या कोई अंतर है?
दीपक और उसकी दीप्ति में
क्या कोई अंतर है?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आत्मा और लिंग में,
क्या कोई अंतर है ?
बदल दिया है गुरु ने शरीर को मंत्र में
और दिखलाया है
अंतर नहीं सावयव और निरवयव में कोई ।
चन्नमल्लिकार्जुन से होकर एक
खोगया है सिर ही मेरा
बात क्यों करते हो मुझ से ?

सब के मन अक्का के प्रति श्रद्धा से भर गये । पूर्ण ज्ञानी चन्नबसवण्ण ने अपने एक प्रसिद्ध पद में अक्का की प्रशंसा की है —

कोटि अजकल्प वर्ष जो जिए,
क्या कहेंगे उन्हें महान् ?
जिनके शरीर पर बनी वाबी या उग आये बेंत,
क्या कहेंगे उन्हें महान् ?
कमर टूट गई जिनकी
ले रहे जो निरंतर डकार ।
हिल रहा सिर,बाल हो गये सफ़ेद
और भ्रष्ट हो गई मति ।
एक बात कहने की चेष्टा में करते है नौ बात
ये अज्ञानी क्या हैं महान् ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महादेवी अक्का महान् हैं, अद्वितीय हैं।
जानकर उचित पथ वे
एक हो गईं घन से।

इस प्रकार ज्ञानियों में ज्ञानी अल्लामा प्रभुदेव महादेवी अक्का की पवित्र आत्मा के तेज के समक्ष नतमस्तक हो गये।

'वह परम ज्योति बन गई। उसने 'स्व' और 'पर' के द्वैत को मिटा दिया। वह हमारे गुहेश्वर लिंग में ही लिंग बन गई। मैं महादेवी अक्का की महिमा के प्रति नतमस्तक हूँ।'

अल्लामा प्रभु से इस प्रकार की प्रशंसा प्राप्त करना महादेवी की आध्यात्मिक पूर्णता का अनुपम प्रमाण पत्र है।

परित्याग की प्रवृत्ति, निरंतर आध्यात्मिक अनुभव और भाव समाधि और सब से बढ़कर शरणों की संगति इन सब में अक्का अपार आनंद से रहने लगीं। सांसारिक जीवन में उनकी कोई रुचि नहीं रह गई। उन्होंने श्रीशैल पर्वत पर कदली वन में जाकर अपना नश्वर शरीर त्याग देने का निर्णय किया। शरणों से उन्होंने एक हृदयस्पर्शी निवेदन किया — "आप कभी न भूलें कि मैं आप की संतान हूँ। मुझे निरंतर आशीर्वाद देते रहें जिससे मैं प्रभु चन्नमल्लिकार्जुन के साथ एक हो सकूँ।"

बाद में उन्होंने यह पद लिखा जिससे यह प्रतिपादित

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हो जाता है कि उनका जन्म, भरण-पोषण और जीवन सब कुछ आध्यात्मिक था।

मैंने जन्म लिया श्री गुरु की अंजलि में
असंख्य शरणों की कृपा में पली, बढ़ी।
भाव का दूध पिया, सुज्ञान का घी
परमार्थ की शक्कर दिया।
उन्होंने शरणों से कहा—
यह त्रिविधामृत दिया मुझे कि मेरा जी भर जाय।
तुमने किया मेरा पालन,
विवाह किया एक अनुरूप वर से।
भेजने को मुझे उस पति के घर में
एकत्रित हुए असंख्य लोग।
मैं ससुराल में रहूँगी ऐसे कि
अच्छा लगेगा बसवण्ण को।
चन्नमल्लिकार्जुन से करके पाणिग्रहण
अर्पित करूँगी आपके सिर पर पुष्प का मुकुट
पर नहीं रक्खूगी घास का मौर।

ऐसा कहकर वे श्रीशैलम् की तीर्थयात्रा पर चली गईं। उन्होंने घोषणा की कि उनको अपने इष्टदेव का दर्शन मिल गया है। यह कहकर वे चन्नमल्लिकार्जुन के हृदय कमल में समा गईं और शून्य के साथ एक हो गईं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संपूर्ण ब्रह्मांड ईश्वरमय है। एक तिल स्थान नहीं है। जहाँ वह व्याप्त नहीं है। जब यह दैविक तेज सभी स्त्री-पुरुषों की सत्ता को भरे है तो फिर लज्जा या संकोच के लिए स्थान कहाँ है?

निम्न पद में इस अद्भुत सत्य का वर्णन किया गया है—

वस्त्र के हट जाने पर
लाज से भर जाते हैं स्त्री पुरुष।
तुम स्वामी हो प्राण के
सर्वत्र व्याप्त हो जगत में
एक कण भी नहीं जहाँ तुम हो न व्याप्त।
तब कहाँ है वह स्थान जहाँ लज्जा है?
हे चन्नमल्लिकार्जुन! सारा जग
आँख बनकर देख रहा मुझको
कैसे ढँक या छिपा सकती हूँ स्वयं को।

उपनिषदों से आजतक के सभी धर्मग्रंथ एक स्वर में यह उद्घोषित कर रहे हैं कि अध्ययन, बुद्धि या विद्वत्ता से मोक्ष या आत्म साक्षात्कार की प्राप्ति नहीं हो सकती। जब मन को निर्वाण की अवस्था तक दमित किया जाता है तो परम उपलब्धि मिलती है। इसको अक्का ने अपने ढंग से कहा है —

वेदशास्त्र पुराण आगम आदि
ओखली में कूटे हुए

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खुद्दी हैं, भूसी हैं।
सुनो हे बंधु! उन्हें क्या कूटना फिर?
काट दो मन का दोलायमन सिर
हे चन्नमल्लिकार्जुन!
सब कुछ फिर शून्य रह जाता है।

अन्य वचनकारों की तरह अक्का में भी एक पंक्ति में गूढ़तम अर्थों को भर देने की क्षमता थी। कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

तोड़कर विषदंत सर्प का
खेल यदि सको उसके साथ
तो अच्छा होगा सर्प का संग।

* * * *

मोह ने धरा ज्ञान का रूप
और किया संतापित स्मृति को।

* * * *

मेले में बनाया जब घर
तो क्या उचित है हे बंधु!
कोलाहल से लजाना।

अल्लामाप्रभु

अल्लामा प्रभु को सभी शरणों की श्रद्धा प्राप्त थी। वास्तव में उनको सबके गुरु का स्थान दिया गया था। उनके

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विशेष गुण थे—प्रखर विचार बुद्धि, ज्ञान को सर्वाधिक महत्व देने की प्रवृत्ति, कर्म और भक्ति को अपनाने वालों पर हल्की चुटकी लेना और उन्हें ज्ञान की परम अवस्था तक पहुँचना।

प्रभुदेव के जीवन के विषय में विस्तार से कुछ भी ज्ञात नहीं है। कर्नाटक के शिमोगा जिले के शिकारीपुर तालुक में बल्लीगावे गाँव में उनका जन्म हुआ था। यह महापुरुष जिसको ब्राह्मण से अस्पृश्य तक सबकी श्रद्धा समान रूप से प्राप्त थीं, नट्टुवा जाति के थे। जहाँ तक मालूम है अल्लामा के पिता निरहंकार के रूप में जाने जाते थे और वे राजमहल के नागवास के प्रभारी थे। महल के संगीत कक्ष और नृत्य कक्ष के विभाग को नागवास कहते थे। बचपन में ही प्रभुदेव को मद्दल बजाने का बड़ा शौक था। थोड़े ही दिनों में उन्होंने इसमें काफ़ी दक्षता प्राप्त कर ली।

उसी नगर के धनदत्त नामक व्यक्ति की पुत्री कामलता अल्लामा को प्रेम करने लगी। दोनों का विवाह हुआ। लेकिन उनका दांपत्य जीवन बहुत दिनों तक नहीं चल सका। ज्वर से कामलता की मृत्यु हो गई। युवावस्था में ही पत्नी को खोने के दुःख से अल्लामा अभिभूत हो गये। नगर में रहना उनके लिए असह्य हो गया। जब वह नगर छोड़कर अदृष्ट दिशा में जा रहे थे, भाग्य के एक अद्भुत खेल ने उनमें

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक चमत्कारिक परिवर्तन ला दिया। वे नगर की सीमा पर विषण्ण हो बैठे थे और अंगूठे से जमीन को कुरेद रहे थे। अचानक उन्हें एक सोने के कलश का शिखर दिखाई पड़ा। उन्होंने मिट्टी को खोदना शुरू किया तो उन्हें शिव का एक मंदिर दिखाई पड़ा। मंदिर में प्रवेश करने पर उन्हें एक योगी मिले। बाद में अल्लामा को मालूम हुआ कि उनका नाम अनिमिषय्या था। उस वृद्ध के शरीर से अलौकिक ज्योति स्फुरित हो रही थी। उनकी पलकें झपकती नहीं थी। उन्होंने अल्लामा के हाथ पर एक इष्ट लिंग रक्खा और अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। उनके जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो गया। उस पवित्र मुहूर्त में अनिमिषय्या अल्लामा के गुरु हो गये। वह लिंग ही अल्लामा का इष्ट लिंग हो गया। उनका विषयासक्त जीवन परित्याग का जीवन बन गया। प्रभुदेव के निम्न वचन में इस अलौकिक अनुभव का वर्णन मिलता है।

स्फटिक के दीप की तरह
इसका न अंतर है न बाहर है।
चकित हूँ मैं इस विचित्र चरित्र कर।
दीखता है देखने से,
हाथ नहीं आता पर छूने से।
पास होता है समीप जाने पर,
अधिक पास आने पर जाता है सरक।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निगल लिया है निराकार को आकार ने,
जकड़ गया है शून्य अपनी ही समाधि में ।
दर्शन मात्र से मिल गया अमृताहार मुझे
हे गोहेश्वर कितना सुंदर होगा
एक हो जाउँ जो इससे ?

इस अनुभव से एक चमत्कार हो गया । साधारण व्यक्ति के रूप में मंदिर में प्रवेश करने वाला अल्लामा पहले शिष्य बना, फिर गुरु और अंत में मंदिर से प्रभुदेव के रूप में बाहर आया । उसके बाद वह अपनी मौज की तरंग में गुरु, लिंग और जंगम तीनों के एक रूप होकर घूमने लगे । अनेक लोगों की असंख्य समस्याओं का समाधान खोजते खोजते अंत में वे रहस्यवादियों के प्रमुख केंद्र कल्याण पहुँचे । उस केंद्र के संस्थापक वसवण्ण के चरित्र और व्यवहार पर उनकी श्रद्धा उमड़ पड़ी । बाद में अनुभव मंडप के सभी लोगों को उन्होंने आध्यात्मिक पथ दिखाया । अंत में जब कल्याण पर विपत्ति के बादल घिर आये और सभी शरण इधर उधर बिखर गये तो प्रभुदेव ने भी वह स्थान छोड़ दिया और न जाने कहाँ चले गए ।

अल्लामा प्रभु ने एक हजार तीन सौ वचनों की रचना की है । एक विद्वान ने उनके वचनों के विषय में कहा है :- "उनके वचन पाठक को उदात्त बनाते है । उसे दूसरे लोक में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ले जाते है। वे चौंक उठते है, आश्चर्य में पड़ जाते है। बहुधा शब्दों को समझने के पहले ही उनका आशय समझ में आ जाता है केवल उसका अर्थ बताना ही कठिन होता है।" एक अन्य विद्वान ने अल्लामा के वचनों के विषय में लिखा है:

"आध्यात्मिक अनुभव की तरह उनकी अभिव्यक्ति की साहित्यिक क्षमता भी अद्भुत है। उन्होंने जीवन को खुली निगाहों से देखा था। बहुत सारी दुर्भेद्य कठिनाइयों को पारकर वे आध्यात्मिक साधना की अंतिम ऊँचाई पर पहुँचे थे और सत्य का दर्शन किया था। वे विलक्षण प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। उनकी बहुमुखी प्रतिभा जिसका विकास उनकी साधना और परीक्षण से हुआ उनके वचनों में सजीव हो उठी है। शब्द हीं लिंग का प्रकाश है।" उनके इस कथन की पूरी निष्पत्ति उनके वचनों में होती है।

बहुत से लोग कहते है कि उन्हें ईश्वर नहीं मिल सकता। अल्लामा का प्रश्न है: कौन ईश्वर को सचमुच चाहता है?

आशा के लिए मर गये करोड़ों लोग,
लिप्सा के लिए मर गये करोड़ों लोग,
स्वर्ण, नारी और भूमि के लिए मर गये करोड़ों लोग।
तुम्हारे लिए हे गोहेश्वर मैंने
एक को भी नहीं देखा मरते।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लोगों को धार्मिक जीवन की दीक्षा तो दी जा सकती है परंतु उनमें भक्ति कौन भर सकता है? अल्लामा ने इसका एक सजीव लक्षणा में वर्णन किया है —

भव्य चित्र तो बना सकते हो, पर क्या जीव फूँक सकते उसमें?

जो भी कायक मिलता है यदि व्यक्ति लगन और उत्साह के साथ उसका पालना करना है तो यह उसे आत्म साक्षात्कार की ओर ले जाता है। जो एक के बाद दूसरे उद्यम में लगे रहते हैं उनका सुन्दर वर्णन निम्न पद में मिलता है—

दिया गया है जो घोड़ा
उस पर नहीं जानते चढ़ना वे
फिर भी माँगते हैं दूसरा घोड़ा।
कंधे पर लादकर काठी घोड़े की
भटक भटक तीनो लोक में थकते हैं।
जानेंगे कैसे ये गोहेश्वर नाम का लिंग?

अल्लामा मूलतः एकेश्वरवादी हैं। मंदिर पूजा और अन्य अनुष्ठानों में उनकी रुचि नहीं थी। अपने एक वचन में वे पूछते है।—

पत्थर का बनाकर घर
बनाकर देव पत्थर का।
पत्थर पर रक्खोगे दूसरा पत्थर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तो देवता कहाँ जायेंगे ?
पत्थर की लिंग प्रतिष्ठा करने से
हे गोहेश्वर ! रौरव नरक जाता है व्यक्ति ।

निम्न पद में ईश्वर और भक्त के संबंधों का रहस्यवादी अनुभव से पूर्ण अनुपम वर्णन मिलता है ।

पत्थर में जैसे होती है आग
जल में जैसे प्रतिबिंब
बीज में जैसे वृक्ष
शब्द में जैसे नीरवता
यह है हे गोहेश्वर !
संबंध तुम्हारा और शरण का ।

जेडर दासिमय्या

अनेक विद्वानों के मतानुसार जेडर दासिमय्या वचनों के प्रथम रचयिता थे । अपने पूर्ववर्ती वचनकारों की प्रशंसा में बसवण्ण कहते हैं—'मार्गदर्शकों के वचन तत्वतः निकष की तरह हैं ।' यह कहते समय उनके मन में दासिमय्या भी रहे होंगे । ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि दासिमय्या 1135 के आस पास रहे होंगे । जैसा कि नाम से ही जाना जा सकता है कपड़ा बुनना उनका कायक था । उनका जन्म स्थान गुलबर्गा में मुदनूर था । उनकी पत्नी का नाम दुग्गले था । दंपति

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बड़े संतोषी थे। आध्यात्मिक साधना में लगे रहते थे दासिमय्या का सबसे बड़ा गुण यह था कि वे गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करते थे। वे छोटी छोटी पंक्तियों में बहुत सारी बातें कह देते थे।

जो भक्त माया के वशीकरण के प्रभाव में व्यर्थ श्रम करते हैं उन्हें ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। ईश्वर भी इन भक्तों पर कोई ध्यान नहीं देते। दासिमय्या ने इसका वर्णन एक अति विरल पर सुन्दर उपमा से किया है —

गर्भस्थ शिशु जानता नहीं माँ का मुँह
माँ भी नहीं जानती शिशु का रूप।
माया मोह में लगे भक्त
जानते नहीं ईश्वर को।
और हे रामनाथ! वह ईश्वर भी
जानता नहीं उन्हें।

आध्यात्मिक साधना और साक्षात्कार के दृष्टिकोण से स्त्री और पुरुष में कोई अंतर नहीं होता —

यदि गोल स्तन और लम्बे केश हैं
तो वह नारी है।
यदि मूँछ और दाढ़ी है
तो वह नर है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर जो भीतर संचार करती है आत्मा
वह न नारी है न नर है।

हम अनगिनत पाप करते हैं। उसके लिए हमारी भर्त्सना करना सरल है। परंतु मान लें यदि ईश्वर स्वयं व्यक्ति हो जाय तो क्या होगा ? निम्न मनोरंजक वचन में दासिमय्या ने ईश्वर को स्नेहभरी चुनौती दी है —

जिसने किया है धारण शरीर
भूख लगती है उसे।
जिसने किया है धारण शरीर
बोलता है वह मिथ्या।
कठिन वचन मत बोलो हे प्रभु रामनाथ !
इसलिए कि एक शरीर है मेरे।
एक बार धारण करके तो देखो
मेरे जैसा शरीर।

'दुःख में सुमिरन सब करे' जैसी उक्तियों का दासिमय्या ने अच्छा वर्णन किया है।

जब आता है संकट ओ प्रभुशिव !
स्मरण करते है तुम्हें।
कट जाता है जब संकट

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नहीं देख पाते तुम्हे वे
चाहे तुमको ठोकर ही लगजाय उनकी ।

अंबिगर चौडय्या

अंबिगर चौडय्या के विषय में अधिक मालूम नहीं है । अब तक उनके लगभग दो सौ वचन मिले हैं । वह लोगों को नाव में नदी के पार ले जाकर अपनी जीविका कमाते थे । उनकी जबान तेज थी । दिखावा या आडंबर देखते ही वे बहुत क्रुद्ध हो जाते थे । परंतु पवित्र और महान् आत्माओं की उपस्थिति में वे विनम्रता और आत्म-तिरस्कार की प्रतिमूर्ति बन जाते थे । उन्होंने अपने ही कायक पर एक लक्षणा आरोपित की है और कुछ अद्भुत वचनों की रचना की है जिनमें निम्न पद प्रसिद्ध हैं —

निरंतर बहती नदी में
जिसमें न बांध है, न पानी रुकता है,
कायाहीन केवट बन आया मैं ।
बंधन या मोक्ष के कारण
अपने मन का ही यदि खेवा दो
पहुँचा दूँगा तुम्हें महानदी के पार ।
रख दूँगा तुम्हें अंबिगर चौडय्या ।
उस विघ्नहीन निस्सीम ग्राम में ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आयडक्की मारय्या

मारय्या चावल चुनते थे इसलिए उनका यह नाम है। वे दूकानों के सामने या बसवण्ण के महल के सामने चावल चुनकर न केवल अपनी ही जीविका चलाते थे अपितु शरणों का भी सेवा-सत्कार करते थे। रायचुर जिले में अमरेश्वर उनका जन्मस्थान था। उनकी पत्नी लक्ष्म्मा उनकी सच्ची सहधर्मिणी थी। एक दिन वे दैनिक आवश्यकता से अधिक चावल लाये। इसका उचित कारण भी था। बसवण्ण ने इस गरीब दंपति पर दया करके उस दिन अपने घर के सामने अधिक चावल गिरा दिया था। जब आवश्यकता से अधिक चावल घर आया तो मारय्या की पत्नी पति पर गुस्सा हो गई और एक जोर की झिड़की दी 'चावल के लिए इस प्रकार का लोभ क्यों? ईश्वर तुम्हारे इस व्यवहार को ठीक नहीं मानेंगे।'[1]

उरिलिंग पेद्दी

उरिलिंग पेद्दी प्रसिद्ध वचनकार उरिलिंग देव के शिष्य थे। कुछ लोगों का विश्वास है कि गुरु और शिष्य दोनों महाराष्ट्र में कांधार के रहने वाले थे। अन्य लोगों के अनुसार दोनों ही बीजापुर जिले के नंदवडगी के रहने वाले थे। कल्याण में उरिलिंग पेद्दि के मठ में उनकी समाधि अब भी मिलती है। उनका पहले का नाम पेद्दण्ण था। वे पेशे से

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चोर थे। एक दिन वे चोरी करने के लिए उरिलिंग के मठ में घुस रहे थे। उस समय उरिलिंग देव सूरय्या नामक शिष्य को शिवमंत्र की दीक्षा दे रहे थे। इस दृश्य ने पेद्दण्ण का मन ही बदल दिया। उनका पूरा व्यक्तित्व ही दूसरा हो गया। उनकी भी इच्छा हुई कि वे शैव मत में दीक्षा लें। लेकिन उन्हें गुरु से यह कहने का साहस नहीं हुआ। इसके लिए उन्होंने एक युक्ति कर आश्रय लिया। वे प्रतिदिन मठ की आवश्यकता भर लकड़ी लाने लगे। एक दिन जब उरिलिंग देव ने उनसे लकड़ी का पैसा लेने का आग्रह किया तो पेद्दण्ण ने अपना लकड़ी का मूल्य बताया कि उन्हें वीरशैव मत में दीक्षा दी जाय। गुरु उनके पहले के पेशे को जानते थे। यह स्वीकार नहीं कर सके। लेकिन पेद्दण्ण ने अपनी अपील जारी रखी। वे रोज अनुरोध करते जाते थे। अंत में गुरु का धैर्य समाप्त हो गया। एक दिन गुरु ने पेद्दण्ण के ऊपर एक पत्थर फेंका और उनसे मराठी में कहा 'घे चा दगदी चा' अर्थात् इसे लो और जाओ। पेद्दण्ण के लिए यह शब्द ही मंत्र बन गये और वह पत्थर इष्टलिंग। वे नित्य इसकी पूजा और ध्यान करने लगे।

उरिलिंग पेद्दी के दो सौ उनचास पद प्राप्त हुए हैं। उनसे पता लगता है कि उन्हें वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों का अच्छा ज्ञान था।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चन्नबसवण्ण

चन्नबसवण्ण बसवण्ण की बड़ी बहन नागम्मा के पुत्र थे। जब बसवण्ण कूडल संगम से मंगलवेधे और कल्याण गये तो चन्नबसवण्ण उनके साथ गये थे। विद्वानों का मत है कि चन्नबसवण्ण सिर्फ़ 24 वर्ष तक जीवित रहे। उन्होंने बहुत अल्प आयु में ही प्रगाढ़ ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इसलिए बसवण्ण उन्हें बड़ा प्यार करते थे। अपने चाचा के सभी क्रांतिकारी कार्यों में उन्होंने उनकी बड़ी सहायता की। यद्यपि मंत्र देने के कारण बसवण्ण चन्नबसवण्ण के गुरु थे फिर भी वे चन्नबसवण्ण के बड़ा आदर करते थे। चन्नबसवण्ण ने ही कर्मयोगी सिद्धराम को मंत्र की दीक्षा दी।

यह तो पहले कहा जा चुका है कि बसवण्ण बिज्जल की हत्या के कुछ समय पहले या बाद में कप्पड़ीसंगम चले गये थे। उस कठिन समय में बसवण्ण ने स्वयं चन्नबसवण्ण के नेतृत्व में शरणों का एक बहुत बड़ा दल उत्तर कर्नाटक के उलिवि नामक नगर में भेजा था। उलिवि में ही चन्नबसवण्ण का देहांत हो गया। उनकी समाधि आज भी वहाँ है।

चन्नबसवण्ण के पंद्रह सौ वचन मिलते हैं। उनसे उनकी विद्वत्ता की गहराई और रहस्यवादी अनुभवों की भव्यता का पता लगाता हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हडपद अप्पण्ण

हडपद अप्पण्ण के जन्म स्थान, माँ बाप या प्रारंभिक जीवन के विषय में अधिक सूचना नहीं मिलती। केवल इतना ही मालूम है कि वे बसवण्ण के निकट सहयोगी थे और उनके साथ सब जगह जाया करते थे। ऐसा पता लगता है कि बसवण्ण को पान खाने का बड़ा शौक था। अप्पण्ण हमेशा पान की थैली अपने पास रखते थे और बीच बीच में बसवण्ण को पान खिलाया करते थे। अप्पण का कायक ही पान देना माना जाता है। 'हडपा' का अर्थ नाई की पेटी भी होता है। इसलिए यह भी माना जा सकता है कि हडपद अप्पण्ण पेशे से नाई थे।

उनके दो सौ पचास वचन मिलते हैं। उनमें वीर शैव धर्म के दार्शनिक सिद्धांत शक्ति-विशिष्टाद्वैत के मूलभूत तत्व षट्स्थल की व्याख्या मिलती है।

हाविनहाल कल्लय्य

कल्लय्य बसवण्ण के समकालीन थे। लेकिन क्या वे कल्याण आये थे और बसवण्ण के सहयोगी या अनुयायी थे इस विषय में कुछ भी पता नहीं लगता। उनके पिता शिवनय्य थे और माँ कल्लव्वा। उनके पिता सुनार थे। मंगल वेधे के प्रमुख बिज्जल ने शिवनय्य से अपने लिए कुछ आभूषण बनाने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को कहा । शिवनय्य ने यह सोचकर कि उनका पुत्र इस का को अधिक कुशलता से कर सकता है उससे आभूषण बना को कहा । लेकिन कल्लय्य ने उत्तर दिया 'मैं केवल शिव क ध्यान कर सकता हूँ, और कुछ नहीं ।' शिवनय्य को पुत्र प बड़ा क्रोध हुआ । उन्होंने उसे खूब पीटा । वितृष्णा में भरक कल्लय्य कल्लिनाथ के मंदिर में गये । वहाँ अपने पेट में छु भोंक दिया । भाग्य से उस घाव से उनकी मृत्यु नहीं हुई बाद में रुद्रमुनि नामक एक संत हाविनहाल आये । कल्लय ने उनसे दीक्षा ग्रहण की । बाद में वे विद्वान् हो गये उनके साठ वचन मिलते हैं ।

मडिवाल माचय्य

माचय्या का जन्म बीजापुर जिले के सिंदगी तालुक के हिप्परिगे नामक गाँव में हुआ था । उनका कायक शरणों के वस्त्र धोना और उन पर इस्तरी करना था । माचय्य बसवण के घनिष्ट अनुयायी थे । निर्भीकता और स्पष्टवादिता उनके प्रमुख गुण थें । वे बसवण्ण को भी नहीं छोड़ते थे ! उनके अनुचित कार्यों को रोकने के लिए वे कभी कभी उनके मुँहप उनकी आलोचना करते थे । उन्होंने जागीर के राजा बिज्ज तक के वस्त्र धोने से साफ इनकार कर दिया । ऐसा विश्वा किया जाता है कि कल्याण के आंदोलन के बाद माचिदेव

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शरणों की एक टुकड़ी का नेतृत्व किया था और बिज्जल की सेना से घमासान युद्ध करते हुए उनकी मृत्यु हो गई थी। कारि नामक स्थान पर उनकी समाधि है।

माचय्य के तीन सौ पैंतालीस वचन अब तक मिले हैं।

मुक्तायक्का

अजगण्ण और मुक्तायक्का भाई बहन थे। वे दुर्लभ रहस्यवादी थे। अजगण्ण एक ऐसे साधक और भक्त थे जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक साधना और अनुभव के रूप में मौन रखने का ही व्रत ले रक्खा था। एक जनश्रुति के अनुसार उन्होंने इष्टलिंग को निगल लिया था। षट्स्थल सिद्धांत के अनुसार परम आत्मा के साथ मिलन अंतिम और उच्चतम अवस्था या स्थिति होती है। अनेक वचनकार अजगण्ण को आत्मसाक्षात्कार की इस स्थिति का सर्वोत्तम उदाहरण मानते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि अजगण्ण का एक भी वचन अब प्राप्त नहीं है।

ये भाई बहन संभवतः बीजापुर जिले के गुंदि ताल्लुक के मसलिकल्लु गाँव के रहने वाले थे। मुक्तायक्का का विवाह हो चुका था। वे अपने पति के साथ रहती थीं। संभवतः भाई भी उनके साथ रहते थे। उनकी पूजा मौन थी, उनका जप भी मौन था। एक दिन एक अप्रिय घटना घटी जिसने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसका मौन व्रत तोड़ दिया। अजगण्ण कहीं से लौटे, उनका सिर चौखट के काठ से टकरा गया। उनके मुख से अनायास ही 'नमः शिवाय' निकल पड़ा। यद्यपि उनका व्रत का टूटना अनैच्छिक और अनभिप्रेत था फिर भी इससे उन्हें घोर पीड़ा हुई। उन्हें लगा कि उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य ही छिन्न-भिन्न हो गया है। उनको जीवन धिक्कार लगने लगा। उन्होंने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।

अपने महान् रहस्यवादी भाई की अकाल मृत्यु मुक्तायक्का के लिए असह्य आघात थी। उन्होंने विलाप किया —

तुम्हारा संग ओ अजगण्ण !
पट्टी बाँध आँख पर
आयना देखने जैसा।

अपने भाई की दीक्षा-सेवा में वह आत्मसाक्षात्कार के द्वार पर पहुँच रही थी कि उसके आत्मदाह ने मुक्तायक्का से यह मौका छीन लिया। इसी संकट की घड़ी में अल्लामा प्रभु मुक्तायक्का के सामने आये। दोनों के बीच का संवाद बड़ा ही मनोहारी है। अल्लामा ने उनसे लक्षणा के माध्यम से प्रश्न किये और उस तेजस्विनी महिला ने भी उनका उत्तर लक्षणा में ही दिया। वह कन्नड साहित्य की अमूल्य निधि है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अल्लामा ने उनके दुर्लभ आध्यात्मिक ज्ञान के हेतु उन्हें बहुत अधिक आदर दिया।

षण्मुख स्वामी

यह माना जाता है कि षण्मुख स्वामी १७०० ई. में हुए थे। इस प्रकार वचनों की रचना बारहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक छः-सौ वर्षों तक निरंतर चलती रही। उल्लेखनीय बचनकारों में षण्मुख स्वामी संभवतः अंतिम हैं। उनके वचनों में अखंडेश्वर उपनाम या प्रतीक मिलता है। वे गुलबर्गा जिले में जेवार्गी में शरणों के मठ के प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त उनके विषय में कुछ नहीं मालूम है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भाग—२

वीरशैव धर्म

शिव के उपासक, शिवशरणों ने कन्नड भाषा को समृद्ध बनाया और अपने रहस्यवादी अनुभवों को सामान्य जनता में सरल और बोधगम्य भाषा में फैलाया। इनके धर्म को वीरशैव धर्म या वीरशैववाद के नाम से जाना जाता है। जिन लोगों ने इस धर्म को अपनाया और इसका प्रचार-प्रसार किया उन्हें वीरशैव, लिंगवंत या लिंगायत आदि नाम दिये जाते हैं। इन शब्दों की एक प्रसिद्ध विद्वान् ने निम्नप्रकार से व्याख्या की है :—

शैव का अर्थ है शिव की पूजा करने वाला अर्थात् जिसने शिव को अपनी उपासना का लक्ष्य बनाया है। शिव के साथ लगे विशेषण 'वीर' के दो अर्थ किये जाते हैं— प्रथमत :—इस शब्द का अर्थ है शिव में एकान्त और दृढ निष्ठा। द्वितीयत :—यह शब्द धर्म के प्रचारकों द्वारा धर्म के प्रचार में झेली गई समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करते समय मन की एकान्त निष्ठा, उत्साह और साहस का द्योतक है। पहली व्याख्या अधिक मान्य है। लिंगवंत का अर्थ अधिक सरल है। जिस प्रकार धन रखने वाला व्यक्ति

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धनवंत होता है उसी प्रकार जिसके पास लिंग है वह लिंगवंत होता है। दूसरे शब्दों में जो अपने शरीर पर लिंग धारण करता है वह लिंगवंत है। वीरशैव और लिंगवंत शब्दों का उल्लेख बारहवीं सदी के वचन लेखकों की कृतियों में मिलता है।

उसी विद्वान् के अनुसार जो आयत लिंग या इष्ट लिंग धारण करता है वह लिंगायत है। इष्ट लिंग की पूजा और उसको शरीर पर धारण करना वीरशैवों को अन्य शैवों से अलग करता है।

इस धर्म के सिद्धांत को शक्ति-विशिष्टाद्वैत की संज्ञा दी गई है। भक्ति या आत्म-साक्षात्कार की अवस्था में जीव और शिव एक हो जाते है। इसलिए इस सिद्धांत को अद्वैत कहते हैं। इस सिद्धांत का दार्शनिक आधार यह है कि शक्ति शिव की सहगामिनी और सहजगुण है। इस सिद्धांत में शक्ति शिव के समान स्तर पर हैं। एक विद्वान् का मत है :

शक्ति विशिष्टाद्वैत का दर्शन यह प्रतिपादित करता है कि शिव और शक्ति में पूरा समन्यव है। वह शक्ति शिव की इच्छा से ही जागृत होती है और अंत में चित् की अवस्था में वह शिव की प्राकृतिक अवस्था में लुप्त हो जाती है। जैसे परम आत्मा सत् चित् आनंद है वैसे ही स्वभावतः शक्ति भी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सत् चित् आनंद है। इसलिए दोनों का परस्पर सामंजस्य पूर्ण तर्क सम्मत है। शिव और शक्ति का समन्वय 'शक्ति विशिष्टाद्वैत' कहा जाता है।

एकाकी अवस्था से निकलने के लिए परमात्मा ईश्वर ने ब्रह्मांड की सृष्टि की इच्छा की। ज्यों ही उन्हों ने यह इच्छा की उनकी इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रियाशक्ति के साथ उनके सामने प्रगट हुई। महोपनिषद्, जिसमें सृष्टि का वर्णन है, में यह अंश मिलता है "सो एकाकी न रमते, सः द्वितीयं ऐच्छत, स इच्छां चक्रे–इदं सृजेयम् इति" अपनी एकाकी अवस्था में वह आत्मसुख नहीं प्राप्त कर सकता। उसको दूसरे के साथ की इच्छा हुई। उसने इच्छा कीकि मैं सृष्टि बनाऊँगा। शक्ति इस कार्य के लिए प्रगट हुई। शिव की तरह उसका मुख्य गुण है कि वह सच्चिदानंद स्वरूपिणी है। काश्मीर शैववाद या शाक्त-सिद्धांत में ऐसी अद्वैत भावना के लिए स्थान नहीं है। उन संप्रदायों में शिव केवल निमित्त कारण हैं और शक्ति के संग के कारण ही उपासना के पात्र हैं तथा पूर्णता और शक्ति को प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर शक्ति-विशिष्टाद्वैत में शक्ति को क्रिया की कोई स्वतंत्रता नहीं है और उसपर परतंत्रता का अवरोध भी नहीं है। शिव की पूर्ण स्वाधीनता और ब्रह्मांड को सृजन करने और नियामित करने की क्षमता शक्ति के कारण ही है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह बात विशिष्टाद्वैत में विशेष रूप से बतलाई गई है।

महान् वीरशैव संत निजगुण शिवयोगी ने शिव और शक्ति के इस समन्वय का निम्न पद्य में बड़ा ही कवितामय वर्णन किया है।

जैसे क्षीर-समुद्र में हो मीठापन,
और ज्योत्स्ना में शीतलता,
तथा कुसुम में सुगंध
वैसे ही परमशिव में रमी
शैलसुता उमा के प्रति
होता मैं नतमस्तक।

उसके साथ ही साथ जीव की प्रकृति के विषय में भी विचार करना चाहिए। स्वयं शिव, अपने निर्गुण रूप में माया के प्रभाव में आते हैं और जीव के नाम से जाने जाते हैं। इस प्रकार शिव स्वयं ही जीव हैं। परन्तु जब कि शिव सर्व-व्यापी और सर्वशक्तिमान हैं जीव का ज्ञान और शक्ति दोनों ही सीमित है। अविद्या में जकड़कर वह शिवत्व को भूल जाता है, सांसारिक झंझटों में उलझ जाता है। गुरु सदैव अपने शिष्य को इष्ट लिंग देता है। शिव इष्ट लिंग में निवास करते हैं। शिष्य को उस इष्ट लिंग की अवश्य उपासना करनीचाहिए औरउसके द्वारा शिव के साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वीरशैव धर्म के अनुसार सभी आध्यात्मिक साधना की यही चरम अवस्था है। वीरशैव धर्म में इसका विशद वर्णन षट्-स्थल के सिद्धान्त में पाया जाता है। षट्-स्थल सिद्धान्त वीरशैवधर्म और इसके शक्तिविशिष्टाद्वैत दर्शन का अनूप और विशेष अभिलक्षण है। इस मत में आठ साधनांग है जिनसे चित्तशुद्धि होती है जो षट्-स्थल की साधना के लिए आवश्यक हैं। ये साधनांग जीव को अनुशासित करते हैं। उसे दूषक प्रभावों और भ्रष्ट करने वाली विसंगतियों से बचाते है। इस प्रकार न केवल चित्तशुद्धि करते हैं बल्कि मन की एकाग्रता को बढ़ाते हैं। इन आठ साधनाओं को मिलाकर 'अष्टावरण' की संज्ञा दी गई है।

हम पहले मोटे तौर पर इन पर विचार करेंगे :—

गुरु :—मोक्ष या आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक साधना प्रारंभ करने वाले साधक को गुरु ही मंत्र-दीक्षा देता है। अन्य कई धर्मों की तरह वीरशैव धर्म में भी गुरु को प्रमुख स्थान दिया जाता है। शिव बड़े हैं या गुरु? वीरशैव धर्म इसका स्पष्ट उत्तर देता है 'गुरु'। इसका स्पष्ट कारण है कि गुरु शिष्य का आध्यात्मिक उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है। गुरु ही अपनी कृपा से शिष्य को इष्टलिंग प्रदान करता है। इस कारण वह दीक्षा-गुरु हो जाता है। गुरु यह ध्यान रखता है या चेष्टा करता है कि

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिष्य षट्-स्थल पथ पर ठीक बढ़ रहा है। इस प्रकार वह शिक्षा गुरु हो जाता है। गुरु ही शिष्य को मोक्ष या आत्म-साक्षात्कार के योग्य बनाता है। इस प्रकार वह मोक्ष गुरु होता है। ये तीनों कार्य एक ही व्यक्ति कर सकता है या विकल्प से अलग-अलग व्यक्ति ये उत्तरदायित्व ले सकते हैं। जो भी हो, गुरु की दीक्षा के बिना किसी भी व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक पथ पर चलना भी असंभव है, आगे बढ़ना तो दूर की बात है। सभी वचनकारों का यही मत है।

बसवेश्वर का कथन है :—

मटका बनाने के लिए
पहले मिट्टी चाहिए
आभूषण बनाने के लिए
पहले स्वर्ण चाहिए
शिव पथ के ज्ञान के हेतु
गुरुपथ ही जानना होगा पहले।

इस पवित्र कर्तव्य के पालन के लिए गुरु की पात्रता के ऊपर बहुत बल दिया गया है। यह कहा गया है कि जिस व्यक्ति को मोक्ष की गहरी लालसा नहीं है वह सच्चा साधक नहीं हो सकता। वैसे ही जिसको उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान नहीं मिल पाया है और जो सदैव शिव की संगति में नहीं है वह गुरु नहीं हो सकता।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अल्लामा प्रभु का कहना है—

भोजन की गठरी को
बांधने से पेट पर
क्या होगी शांत क्षुधा ?
अंग पर लिंग पर स्थापित करने से
क्या होगा ?
बाँस वन में कंकड़ फेकने से
क्या कंकड़ बन जायेगा लिंग
और फेकने वाला गुरु
तथा बाँस वन भक्त ?
हे गोहेश्वर ! लज्जा आती है मुझे
देखकर ऐसे लोगों को।

लिंग :— शिव स्वयं लिंग हैं। गुरु के द्वारा दिये गये इष्ट लिंग के रूप में शिष्य को शिव की उपासना और पूजा करनी होती है। व्यक्ति को इष्टलिंग हमेशा अपने शरीर पर धारण करना चाहिए। पूजा के इस लिंग को अपनी हथेली पर रखकर उसकी पूजा करनी चाहिए। वास्तव में लिंग के तीन रूप होते हैं। जो लिंग स्थूल शरीर पर धारण किया जाता है और जिसका रूप भी स्थूल होता है उसे इष्ट लिंग कहते हैं। जो लिंग प्राणरूपी शरीर में रहता है उसे प्राणलिंग कहते हैं। कारण-तनु या शरीर में रहने वाला लिंग भाव लिंग कहा जाता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इष्ट लिंग भौतिक लिंग है, प्राणलिंग जीवन का लिंग और भाव लिंग आदर्श लिंग। इष्ट लिंग की पूजा के द्वारा व्यक्ति को प्राणलिंग की खोज करनी चाहिए। अंत में उसे भावलिंग के साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहिए।

जंगम :—साधक के लिए तीसरा संरक्षण जंगम नाम का आवरण है। जंगम एक घुमंतू संत होता है। जो पैदल ही एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता रहता है और आध्यात्मिक साधक के प्रयासों में सहायता करता है। जंगम शब्द का अर्थ ही है घूमने वाला साधु पुरुष।

दूसरे धर्मों में जो महत्व सत्संग को दिया गया है, वीर-शैव धर्म में वह जंगम को दिया गया है। यह निर्धारित किया गया है कि आध्यात्मिक साधक को गुरु, लिंग और जंगम को एक सा समझना चाहिए। उसे अपना शरीर गुरु को मन लिंग को और धन जंगम को दे देना चाहिए। दूसरे शब्दों में उसे शरीर से गुरु की सेवा करना चाहिए, मन से ईश्वर का ध्यान करना चाहिए और अपने धन से ईश्वर के शरणों और भक्तों की सेवा करनी चाहिए। प्रभुदेव ने एक वचन में बताया है कि शरण ही ईश्वर है।

बहती नदी का पूरा शरीर ही पैर है
जलती अग्नि का पूरा शरीर ही मुँह है,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहते पवन का पूरा शरीर ही हाथ है
इसीलिए हे गोहेश्वर ! तुम्हारी शरण में !
सर्वांग शरीर ही लिंगमय है ।

जिन शरणों ने शिव का साक्षात्कार किया यदि वे मुँह खोलते हैं तो उससे ईश्वर का ज्ञान और ईश्वर से संबन्धित कहानियाँ और उपदेश बाहर निकलते हैं। शरणों की इस आध्यात्मिक उपलब्धि का बसवण्ण ने सुन्दर उपमाओं के द्वारा वर्णन किया है :—

तालाब, नाले और कूप
यदि मुँह खोलें ।
तो उनमें दीखेंगे घोंघें, बुदबुदे ।
यदि वारिधि ही मुँह खोले
तो दीखेंगे रत्न ही उसमें ।
कूडलसंगमदेव शरण यदि बोलें
तो दीखेगा लिंग ही स्वयम् ।

पादोदक :—ईश्वर का पाद प्रक्षालन के लिए अर्थात् इष्टलिंग के प्रक्षालन के लिए या गुरु या जंगम का पाद प्रक्षालन के लिए जो जल प्रयोग में लाते हैं और प्रक्षालन के बाद जिसे एकत्र किया जाता है उसे पादोदक कहते हैं। इस जल के ग्रहण करने से मनुष्य के सभी पाप धुल जाते हैं। पाद को गुरु भी कहा गया है और उदक को शिष्य। एक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीसरी व्याख्या के अनुसार पाद स्वयं परम ब्रह्म है और परिणामतः उदक उसका ज्ञान है। एक और व्याख्या के अनुसार पादोदक गुरु और शिष्य या ज्ञान और ज्ञेय का मिलन है। गुरु, लिंग और जंगम के पादोदक को क्रमशः गुरु पादोदक, लिंग पादोदक और जंगम पादोदक कहा गया है। ये सभी चित्तशुद्धि की ओर ले जाते हैं।

प्रसाद :—प्रसाद का अर्थ है कृपा या अनुग्रह। इस सिद्धान्त में इसका तकनीकी अर्थ है ईश्वर की कृपा या अनुग्रह। गुरु की कृपा को शुद्ध प्रसाद कहते हैं, लिंग की कृपा को सिद्ध प्रसाद और जंगम की कृपा को प्रसिद्ध प्रसाद। शरणों के मत के अनुसार तीनों प्रसादों में जन्म और मृत्यु की बुराई को नाश करने की शक्ति है। इनकी महिमा का वर्णन बसवण्ण के भतीजे महाज्ञानी चन्नबसवण्ण ने निम्न वचन में किया है :—

गुरु प्रसाद से होती शरीर शुद्धि
लिंग प्रसाद से होती मन शुद्धि
जंगम प्रसाद से होती प्राण शुद्धि
कूडल चन्न संगमदेव !
पाने से त्रिविध प्रसाद यह
लुप्त हो जाता है
जन्म मरण का बंधन।

JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ....8225....

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विभूति :—शिव विभूति के प्रेमी है । कामदेव को अपने ललाट के नेत्र की अग्नि से जलाकर क्षार करदेने पर शिव ने अपने मुँह पर इस पवित्र भस्म को मल लिया । यह भस्म पवित्र है क्योंकि उसने लोलुपता का विनाश कर दिया है । इसीलिए शिव को अपने मुँह और शरीर पर भस्म लगाना प्रिय है । विभूति का अर्थ ऐश्वर्य भी है । यह इसलिए भी कहा गया है क्योंकि यह अरिषड्वर्ग (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य) का विनाश करती है । वीरशैव धर्म में यह नियम है कि भक्तों को ललाट और शरीर पर विभूति लगानी चाहिए ।

रुद्राक्ष :—एक मत के अनुसार रुद्राक्ष नाम इसलिए पड़ा है क्योंकि यह रुद्र रूप शिव के नेत्रों से निकला है । ऐसा कहा जाता है कि जब शिव ने त्रिपुर राक्षस को अपने ललाट के आंख से निकली अग्नि से जला दिया तो उन्होंने इस विनाश की लीला को लगातार ध्यान से देखा और उनकी आँखों से निकले आँसू रुद्राक्ष हो गये । रुद्राक्ष को गले, बाँह या कलाई पर पहनने से भक्त को यह विश्वास मिलता है कि वह हमेशा ईश्वर की रक्षा में है ।

मंत्र :—वे पवित्र अक्षर और सूत्र या नियम जिनकी गुरु शिष्य को दीक्षा देता है मंत्र कहे जाते हैं । इस मत में दो मंत्र है

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पंचाक्षरी और षडक्षरी। 'नमः शिवाय' पंचाक्षरी मंत्र है और 'ओम् नमः शिवाय' षडक्षरी। इन्हें ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि एक में पाँच अक्षर हैं और दूसरे में छः। शिव का ध्यान करते समय जप करने में शिष्य को गुरु द्वारा सिखाये गये पंचाक्षरी या षडक्षरी मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। इससे वह अपने आत्मसाक्षात्कार के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। ये आठों साधनांग जिनका संक्षेप में वर्णन किया गया है किले-बंदी की तरह हैं जो शिष्य की आत्मा की सभी प्रलोभनों और विचलनों से रक्षा करते हैं। इसलिए इन्हें 'अष्टावरण' कहते है। आध्यात्मिक साधना की सफलता के लिए ये परम आवश्यक हैं।

षट्-स्थल :—वीरशैव धर्म के अनुसार शिव या लिंग ही जीव या आत्मा के रूप में अवतार लेता है। जीवात्मा तीन प्रकार के मल या अशुद्धि से आक्रांत होती है— आणवमल, मायामल और कार्मिक मल। उसमें सार्वभौमता नहीं है यह सोचकर जीव अपने को शिव से अलग समझता है और अपने को अणु मानता हैं। इसी माया को आणवमल कहते हैं। इस माया के फल-स्वरूप जीव को करण शरीर की प्राप्ति होती है। यह माया मल है जिसके द्वारा जींव को मिथ्या विश्वास हो जाता है कि वह सर्वज्ञानी नहीं है और उसका ज्ञान सीमित है। इस माया के फल-स्वरूप उसे सूक्ष्मशरीर की प्राप्ति होती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्त में कार्मिक मल जीव को यह मिथ्या विश्वास दिलाता है कि उसको क्रियाशक्ति नितांत सीमित है और वह सर्वशक्तिमान नहीं है। इसी माया से उसे स्थूल शरीर मिलता है। इसके अतिरिक्त यही माया जीव को उसके कर्मों के सुख या दुःख का अनुभव कराती है।

तक्नीकी तौर पर, स्थल का अर्थ है परम आत्मा। परन्तु व्यवहार के क्षेत्र में इसे आध्यात्मिक साधना का एक चरण मानना चाहिए। वे चरण जिनके द्वारा लिंग जीव की अवस्था में उतरता है या इसके विपरीत वे चरण जिनके द्वारा जीव लिंग की अवस्था को प्राप्त होता है उन्हें ही षट्-स्थल कहते हैं। प्रत्येक अवस्था में लिंग एक ऐसा रूप लेता है जो उसी अवस्था में जीव का समकक्ष होता है, उसकी आध्यात्मिक साधना में सहायता करता है और अंत में अपनी अवस्था में मिला लेता है। इस सिद्धांत का यही मूल तत्व है। ये षट्स्थल हैं—भक्त स्थल, माहेश्वर स्थल, प्रसादी-स्थल, प्राणलिंगी-स्थल, शरण-स्थल और ऐक्य-स्थल। नीचे प्रत्येक स्थल के लक्षण और उनके घटित क्रियाओं का संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

भक्त स्थल :—भक्त के आध्यात्मिक प्रयत्न की प्रथम अवस्था या चरण भक्त स्थल है। भक्त को सदैव इष्टलिंग की ही पूजा करनी होती है। जो लिंग इस चरण में पूजा ग्रहण

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करता है और भक्त को ऊपर उठाता है उसे आचार लिंग कहते हैं। उसकी भक्ति को सद्भक्ति कहते हैं। सुचित्त वह हाथ है जिससे वह आचार लिंग को गुणवान कर्म अर्पित करता है। इस अवस्था में भक्त में आचार, वाणी, क्रिया, स्मृति और अनुभव की शुद्धता रहनी चाहिए। दूसरे भक्तों का संग निश्चय ही परम आवश्यक है। उसे निरंतर शिव की पूजा में लगे रहना चाहिए। इस प्रकार पूजा, भक्तों के संग और चरित्र की शुद्धता के द्वारा भक्त आध्यात्मिक विकास के दूसरे चरण में पहुँचता है।

माहेश्वर स्थल :—भक्त स्थल से भक्त माहेश्वर स्थल में जाता है। इस अवस्था में भी भक्त इष्टलिंग की ही पूजा करता है। वह लिंग जो पूजा को प्राप्त करता है वह गुरु लिंग होता है। उसकी इस अवस्था की भक्ति को निष्ठा भक्ति कहते हैं। जिस साधन के द्वारा वह अपनी पूजा अर्पित करता है उसे सुबुद्धि कहते है। इसे उसका हाथ कहते हैं। इस अवस्था में उसको कठिन व्रत करने पड़ते हैं। उसको शिव के प्रति एकांत और अखंडित निष्ठा रखनी होती है। यह निष्ठा किसी अन्य देवता के साथ नहीं होनी चाहिए। यह निष्ठा दूसरे देवता को स्वीकार करनातो दूर मानती तक नहीं। उसे गुरु, लिंग और जंगम में दृढ और अविचल निष्ठा होनी चाहिए। उसके पथ पर जो भी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कठिनाई या विघ्न आयें उससे लड़ने के लिए उसमें चट्टान के जैसी दृढ़ता होनी चाहिए। शरणों ने इस पर उतना जोर इस लिए दिया है क्योंकि उन्हें मानव प्रकृति और उसकी असफलताओं का पूरा ज्ञान है। इसलिए उन्हें मालूम है कि यह असामान्य नहीं है कि भक्त का उत्साह और गंभीरता धीरे-धीरे क्षीण हो जाय। उसकी साधना शिथिल हो जाय। अगर ऐसा हुआ तो वह कैसे आगे बढ़ सकेगा ? आध्यात्मिक चिंता के इस पक्ष के विषय में बसवण्ण का कहना है :—

धीरे-धीरे भक्ति तिरोहित होती है बंधु !
प्रथम दिन ललाट तक
दूसरे दिन हाथ तक
तीसरे दिन तंद्रा में।
अगर तुम किसी चीज को जकड़ोगे
तो कूडल संगम देव पार करेंगे तुम्हें।
अगर ऐसा नहीं करोगे
मझधार में ही डुबा देंगे।

भक्त को अपने मत पर अडिग रहना चाहिए। अपने सामने आनेवाली संसार की सभी कठिनाइयों को उसे ईश्वर के द्वारा ली गई परीक्षा समझना चाहिए और उनका साहस से सामना कर उन्हें जीतना चाहिए। जेडर दासिमय्य का एक वचन इस पर यूँ प्रकाश डालता है—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भक्त से भोजन की भिक्षा कराता है ईश्वर
कसता है उन्हें कसौटी पर सोने सा ।
घिसता है सिल पर चंदन की तरह
ईख की तरह पीसता है कोल्हू में ।
यदि नहीं डरोगे किसी से भी तुम
हे रामनाथ ! अपनी बाहों में भरेंगे वे ।

ईश्वर के प्रति इस कठिन निष्ठा की अवस्था में हमारी सभी इंद्रियों को उसमें दृढ़ता के साथ बँधा होना चाहिए । यह अडिग विश्वास कितना कठिन है । इसका एक अन्य वचन लेखक ने वर्णन किया है —

जो तुम पर ध्यान लगाये है
उस मन को तुमने सोना दिखाया
अपने पर लगी आँख के लिए
तुमने नारी दिखाया
पूजा करने वाले हाथों के लिए
तुमने मिट्टी दिखाया
इन त्रिविध को त्रिविध दिखाकर
स्वयं दूर और पृथक् हो गये ऐसे
हे अमर गुंड के मल्लिकार्जुन !

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आश्चर्य चकित हूँ मैं
तुम्हारे इस चमत्कार पर।

माहेश्वर स्थल में अगर भक्त प्रलोभन का शिकार नहीं होता और शिव को छोड़ अन्य देवताओं की तरफ उसका ध्यान नहीं जाता तो वह अपने आध्यात्मिक विकास के दूसरे चरण में उठ जाता है।

प्रसादी स्थल :–भक्त को उसकी आध्यात्मिक साधना के प्रसादी स्थल नामक अवस्था में जो ईश्वर सहायता करता है, उसे 'महालिंग' कहा जाता है। जिस हाथ से भक्त महालिंग की पूजा करता हैं उसे 'निरहंकार' कहते हैं। भक्त के द्वारा अर्पित और ईश्वर द्वारा उपभुक्त भक्ति को 'अवधान भक्ति' कहते हैं। जो भक्त इस अवस्था को प्राप्त हो जाता है उसके दो मुख्य भेदक लक्षण होते हैं—संतुष्टि और मन की शांति। उसे इसका ज्ञान हो जाता है कि उसकी इन्द्रियों को सुख या दुःख के अनुभव करने भी स्वतंत्र शक्ति नहीं रह गई है। भक्त की इंद्रियों के द्वारा ईश्वर स्वयं सुख और दुःख के अनुभवों को प्राप्त करता है। इसलिए भक्त में संसार के सभी अनुभवों को ईश्वर के वरदान के रूप में स्वीकार करने की निष्कामवृत्ति आ जाती है। सुख और दुख के अनुभव भक्त की इच्छा और स्थिरता को सबल करने के लिए भगवान के द्वारा ली गई परीक्षाएँ हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक शरण ने प्रसादी की अवस्था का वर्णन इस प्रकार किया है : "मन शरीर तक पहुँचता है और शरीर मन तक। शरीर और मन दोनों पहुँचते हैं इन्द्रियों तक। जीव शरीर और इन्द्रियों तक पहुँचता है। अगर शरीर, इन्द्रिय और जीव सभी को परम आत्मा को समर्पित किया जाय तो यह उत्सर्ग का कार्य होता है वही ईश्वर का आशीर्वाद भी है। जो इस अवस्था में है वह प्रसादी है। वैसे व्यक्ति के लिए मरण नहीं होता।"

सभी वस्तुओं को अपने उपयोग में लाने के पूर्व ईश्वर को समर्पित कर देना चाहिए। । अल्लामा प्रभु ने इस सिद्धांत के विपरीत आचरण करने वालों पर अपने विशेष ढंग से व्यंग्य किया है।

हे गोहेश्वर ये वे हैं जो सुख करते हैं किन्तु
यह तुम हो जिसे वे दोष देते हैं।

प्रसादी उस प्रकार का भक्त है जो यह जानता है कि वह स्वयं कुछ नहीं अनुभव करता। स्वयं ईश्वर ही सब कुछ अनुभव करता है। किन्तु अपनी कृपा से उसको ऐसा भान कराता है कि वही सब कुछ अनुभव कर रहा है। प्रसादी सर्वस्व ईश्वर को समर्पित कर देता है। वह भोज खाता है। फिर भी व्रत करता है। उस के लिए शरीर की स्थिति नहीं रह जाती। वह भोगता है फिर भी ब्रह्मचारी है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस प्रकार, प्रसादी समर्पण की भावना से निरंतर साधना करता है। उससे उसे संतुष्टि, मन की शांति, अंतरात्मा का प्रबोध और दया के गुण प्राप्त होते हैं। इस प्रकार वह प्राण-लिंग नामक दूसरे चरण में प्रवेश करता है।

प्राणलिंगी स्थल :—भक्त की इस चरण की पूजा को जो लिंग स्वीकार करता है उसे 'चरलिंग' कहते हैं। 'सुमनो हस्त' नामक हाथ से भक्त ईश्वर को अपनी पूजा अर्पित करता है। उसकी भक्ति को अनुभाव भक्ति कहते हैं। भक्त की आध्यात्मिक साधना में अब कुछ बाह्य कार्य नहीं रह जाता, उसके बाद सब कुछ अंतर की क्रिया है। इस चरण का रहस्य प्राणवायु को लिंग में केंद्रित करना है, लिंग को प्राणवायु में। इस द्विविध केंद्रीकरण की प्रक्रिया को प्राणलिंग कहा जाता है। इस को शिवयोग भी कहते है। यह राज योग भी है। इस योग का उद्देश्य प्राण वायु के एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ तक भटकते रहने पर रोक लगाना है और अपनी इच्छा के पदार्थ पर स्थिर करना हैं। इस साधना से भक्त का मन शुद्ध हो जाता हैं और उसका विवेक जाग जाता है। उसका अहं तृप्त हो जाता है। लिंग पर स्थिरभाव से लगा उसका मन शांति को प्राप्त कर लेता है। उसकी अंतरात्मा को लिंग के प्रकाश का दर्शन होने लगता है। धीरे धीरे वह अपना वास्तविक परिचय जानने लगता है। लेकिन उसकी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सभी अन्तर क्रियाएँ अपने इष्टलिंग के साधन से ही घटित होती हैं।

"आंख को इष्ट लिंग पर लगाकर, भटकते मन पर नियन्त्रण कर और उसे स्थिर बनाकर, प्राण लिंग के रहस्य को समझने की चेष्टा करना—इसको ही शिवयोग कहते हैं। इस साधना में स्थूल शरीर इष्ट लिंग में मिल जाता है, सूक्ष्म शरीर प्राण लिंग में और कारण-शरीर भाव लिंग में। भक्त और ईश्वर का भेद मिट जाता है।"

प्रभुदेव ने भक्त की इस अवस्था के अनुभव का अनूठे ढंग से वर्णन किया है —

काया ही सेज है प्राणलिंग के लिए
आकाश गंगा से होता इसका स्नान।
पूजा इसकी है पुष्पहीन परिमल से
हृदय कमल में है शब्द शिव शिव
हे गोहेश्वर यही है अद्वैत।

इस अवस्था में भक्त का मन एक क्षण के लिए भी ईश्वर से वियोग सहन नहीं कर सकता। वह सावधानी से ऐहिक और पारलौकिक कर्मों को करता है। इस प्रकार वह आध्यात्मिक विकास के शरण स्थल नामक चरण में पहुँच जाता है।

शरण-स्थल :– शरण-स्थल की भक्ति को 'आनंद भक्ति'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहते हैं। जिस हाथ से यह भक्ति समर्पित की जाती है उसे 'सुज्ञान' कहते हैं।

उस अवस्था में भक्त को किसी बाह्य संस्कार या अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं रहती। क्योंकि वह ज्ञाता है। वह जानता है कि क्या क्षणिकवस्तु है और क्या स्थायी। वह अपनी इंद्रियों की क्रियाओं पर ध्यान नहीं देता। ज्ञान ही उसका स्तित्व है। शरण का यह लक्षण है कि वह अपने हृदय कमल में ईश्वर के साथ अभिन्न रूप से संबद्ध होता है। उसे तपस्या करने के लिए पहाड़ पर या जंगल में भागने की आवश्यकता नहीं होती। अल्लामा के शब्दों में —

चित्त की समस्थिति में रहनेवाले शरण को
मठ क्या, पर्वत क्या, जनसंकुल क्या
और निर्जन क्या ?
आत्म साक्षात्कार किया है जिसने
उस शरण को
बाहर की चिन्ता क्या, ध्यान क्या
मौन क्या, जप क्या, तप क्या ?

एक कदम और आगे जाने पर उसके लिए ध्यान या पूजा जैसे अनुष्ठान संभव नहीं होते। क्योंकि वह स्वयं ध्येय बन जाता है। उसके लिए ध्यान करने को क्या है ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अल्लामा प्रभु ने इस अवस्था का अच्छा वर्णन किया है —

कहते हो ध्यान करो ध्यान करो,
करना है किस पर ध्यान ?
काया ही मेरी हो गई है कैलाश
हो गया मन ही लिंग ।
शरीर ही हो गया है शय्या
ध्यान के लिए कोई ईश्वर है क्या ?
ध्यान के लिए कोई भक्त है क्या ?
गोहेश्वर लिंग में लीन कर दिया जब स्वयं को ।

शरण स्थल की अलौकिक अवस्था का अनुभव करके भक्त की आत्मा ध्यान और तपस्या जैसी सभी आध्यात्मिक साधनाओं की चरम अवस्था पर पहुँच जाती है । उस चरम अवस्था को ऐक्य स्थल कहते हैं ।

ऐक्य-स्थल :— इस अवस्था में समर्पित भक्ति को 'समास भक्ति' कहते हैं । जिस हाथ से लिंग की पूजा की जाती है उसे 'सद्भाव' कहते है । यह अवस्था वर्णनातीत होती है । व्यक्ति इसको व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा ही समझ सकता है । इस अवस्था में ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान सब एक हो जाते है । शरणों ने इस अवस्था के वर्णन के लिए बहुत सी उपमाएँ प्रयुक्त की हैं । जैसे घी में मिलकर घी एक हो

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाता है। दूध में मिलकर दूध एक हो जाता है। तेल में मिलकर तेल एक हो जाता है। प्रकाश में मिलकर प्रकाश एक हो जाता है। शून्य में मिलकर शून्य एक हो जाता है। प्राण में मिलकर प्राण एक हो जाता है। मैं इस संगति का कैसे वर्णन करूँ ?

महादेवी अक्का ने ऐक्यस्थल के अनुभव का वर्णन किया है :—

बात नहीं करती मैं
लिंग या लिंग के साथ एक होने की।
संग और निसंग,
नहीं कहती यह होगा या नहीं
नहीं कहती मैं, नहीं कहते तुम।
एक हो गई चन्नमल्लिकार्जुन लिंग में
तों कहती नहीं कुछ, पर मैं हूँ।

शरण जानते थे यह साधना कितनी कठिन है। चन्न-बसवण्ण ने इस साधना की प्रकृति का वड़ी उत्तम उपमा में वर्णन किया है।

अगर शून्य ही जम जाय
तो स्थान कहाँ होगा स्वर्ग, मर्त्य, पाताल के लिए ?
अगर मेघ का जल ही मुक्ता हो जाय

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तो कहाँ से मिलेगा सप्त-सिंधु को जल ?
सीधे शिव ज्ञानी यदि हो जाँय सभी कष्ट में जीने वाले
तो क्या होगा भव की फसल का ?
इसलिए हे कूडल चन्न संगम देव
लाखों में होता है एक भक्त
और कोटि में एक शरण ।

कायक :—सभी वचनकारोंने कायक या शारीरिक श्रम पर विशेष बल दिया है । उन्होंने एक बहुत ही कठोर नियम बनाया है कि चाहे किसी शरण का स्थान कितना भी ऊँचा क्यों न हो उसे अपने पसीने की कमाई से अपनी जीविका चलानी चाहिए । व्यक्ति का सामाजिक स्थान चाहे जो भी हो, जो भी राजकीय पद क्यों न हो, उसे दूसरे की कमाई पर नहीं जीना चाहिए । शरणों के पहले या बाद के किसी भी धर्म या धार्मिक संप्रदाय में इस प्रकार सामाजिक और आर्थिक महत्व के विषय पर इतना अधिक जोर नहीं दिया गया हैं । शरण ने स्पष्ट घोषणा की है कि कायक ही कैलाश है । इस प्रकार उन्होंने संपूर्ण सामाजिक ढाँचे में एक विशेष प्रकार की आर्थिक महत्व की बात कही है जिसका तालमेल परम आध्यात्मिक-सिद्धांतों से जोड़ा जा सकता है । उन्होंने अपने धर्म के तीन मूलसिद्धान्तों – गुरु, लिंग, जंगम—से कायक को उच्च स्थान दिया है । अप्पडक्कि मारय्य एक प्रसिद्ध शरण थे । उनका

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कायक था बसवण्ण के महल या अन्य दूकानों के सामने से अपने भरण पोषण के लिए ही नहीं अपितु शरणों की सेवा के लिए भी चावल चुनना और इकट्ठा करना। उन्होंने कायक के विषय में कहा है—

यदि कोई कायक में लगा है तो गुरु भी आयें तो उनके दर्शन भूल सकता है। लिंग की पूजा भी भूल सकता है। जंगम भी सामने खड़ा तो भूल सकता है। कायक ही कैलाश है। स्वयं अमरेश्वर लिंग भी कायक के अन्तर्गत हैं।

वीरशैव धर्म की प्राचीनता :— वीरशैव धर्म जिसमें अष्ट आवरण, षट्स्थल, कायक, लिंग और जाति से ऊपर उठकर सभी लोगों की समानता और जातिवाद का उन्मूलन जैसे उच्च-सिद्धान्त हैं कितना प्राचीन है? इसका प्रादुर्भाव और विकास कब और किस प्रकार हुआ?

बहुत से लोगों की राय है कि वीरशैव-धर्म के संस्थापक बसवण्ण हैं लेकिन बसवण्ण के निम्न कथन में वीरशैव-धर्म के पथ-प्रदर्शकों और वचनों की बहुत अधिक प्रशंसा की गई है। 'मित्रों! पूर्वपुरुषों के वचन कसौटी की तरह हैं।' इससे स्पष्ट होता है कि यह मत बसवण्ण से पहले का हैं। जेडर-दासिमय्य वास्तव में बड़े पुराने वचनकार है। वीरशैव धर्म उनके बहुत समय पूर्व रहा होगा। यह किस रूप में था यह कहना कठिन हैं। पर यह निसंदेह सत्य है कि बसवण्ण और

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके समसामयिक शरणों ने वीरशैव धर्म पर बहुत अधिक प्रभाव डाला और इसे बहुत जनप्रिय बनाया।

वीरशैव धर्म के मुख्य सिद्धान्त निम्न लिखित हैं—

शिव को छोड़कर सभी जीव उनके जीव हैं। चूँकि वह उनके स्वामी हैं इसलिए उन्हें पशुपति अर्थात् जीवों का स्वामी कहते हैं। आत्मा या व्यक्ति तीन मल से आक्रांत हैं। ये तीनों अविद्या या अज्ञान की रस्सी की तीन लड़ी या गुण जैसे हैं। पशुपति की लिंग के रूप में पूजा करने से और लिंग धारण करने से शिव को प्रसन्न किया जाता है। शिव और शक्ति में न अंतर है न पार्थक्य। शिवयोग के अभ्यास से व्यक्ति अज्ञान के बंधन को छोड़कर मोक्ष या आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त कर सकता है। दया सभी धर्मों का मूल है इसलिए यज्ञों में पशुओं की बलि धर्म के विरुद्ध है।"

इसके अधिकांश लक्षण शैव-धर्मों के अन्य मतों में भी मिलते हैं। वीरशैव-धर्म का मुख्य और विशिष्ट लक्षण लिंग धारण करना है। अब प्रश्न है कि क्या लिंग धारण करना प्राचीन प्रथा है। इसके प्रामाणिक साक्ष्य मिले हैं कि लिंग धारण करना एक पुरानी प्रथा है। मोहेंजोदारो और हड़प्पा में प्राप्त अवशेषों के साक्ष्य पर यह मानना होगा कि लिंग की पूजा और लिंग धारण करना बड़ी प्राचीन प्रथा है। एक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्वान के अनुसार 'सर जान मार्शल कि राय में मोहेंजोदारों और हडप्पा के अवशेषों की सबसे चमत्कारपूर्ण बात यह है कि पाषाणयुग की आदिमजातियों के समय से ही शैवधर्म का अस्तित्व था और यह धर्म अन्य धर्मों से अधिक प्राचीन है।"

निष्कर्ष :—प्राचीन होने से ही कोई धर्म बड़ा नहीं हो जाता। इसके अनुयायी ही इसे महान् बनाते हैं या इसे नीचे गिराते हैं। यह बात सभी धर्मों के लोगों को ध्यान में रखनी चाहिए। इसके अलावा यह कहना भी तर्कसंगत नहीं कि कोई एक धर्म अन्य धर्मों से श्रेष्ठ या उत्तम है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "संसार में जितने भी मनुष्य हैं उतने धर्म होने चाहिए।" अपने आध्यात्मिक अनुभव के आधार पर रामकृष्ण परमहंस कहते थे कि "जितने धर्म हैं उतने ही पथ हैं।" मानवतावाद ही सर्वश्रेष्ठ है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में मानवता का धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है।

किसी भी धर्म की उपयोगिता और सार्थकता तब तक रहती है जब तक वह मानवतावाद का समर्थन करता है। इस प्रकार बसवण्ण के प्रसिद्ध कथन से हम इस वर्णन को समाप्त करते हैं—वह धर्म क्या है जो दया पर आधारित न हो।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अक्क महादेवी

(१)

मुझे यदि भूख लगे
तो है भिक्षान्न ।
प्यास लगे
तो हैं कूप तालाब नाले ।
सोने के लिए हैं भग्न मंदिर ।
हे चन्नमल्लिकार्जुन !
आत्मसंग के लिए तुम हो ।

(२)

प्यार करवा सकता तुझसे क्या
करके अष्टविध अर्चना ?
तुम दूर हो बहिरंग व्यवहार से ।
प्यार करवा सकता तुमसे क्या
लगाकर ध्यान अंतरतम में ?
तुम हो अतीत वाङ्‌ और मन से ।
प्यार करवा सकता तुमसे क्या
जप और स्तोत्र से ?
तुम अतीत हो नाद से ।
प्यार करवा सकता हूँ
क्या भाव-ज्ञान से ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम अतीत हो बुद्धि से।
क्या हृदय-कमल के बीच
सुरक्षित रख पाता हूँ ?
तुम तो हो सर्वांग परिपूर्ण ।
करवाना प्यार तुझसे तो दुष्कर है
इसी में सुख है कि तुम ही करो प्यार
हे प्रभु चन्नमल्लिकार्जुन !

(३)

काया को छाया बनकर
माया ने सताया
प्राण को मन बनकर
माया ने सताया
बुद्धि को स्मृति बनकर
माया ने सताया
स्मृति को ज्ञान बनकर
माया ने सताया
जगत के जन-संकुल को
चाबुक बनकर माया ने सताया
तुम्हारी व्याप्त माया पर हे चन्नमल्लिकार्जुन !
विजय नहीं प्राप्त कर पाये कोई ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४)

यदि तुम कहो हमने छोड़ दिया
माया नहीं छोड़ती तुम्हें ।
तुम नहीं छोड़ते यदि माया को
माया करती है तुम्हारा पीछा ।
माया है योगिनी योगी के लिए
माया है श्रमणी श्रमण के लिऐ
माया है स्तुति यति के लिए
हे चन्नमल्लिकार्जुन, तुम्हारी शपथ
डरती नहीं मैं तुम्हारी इस माया से ।

(५)

वेद शास्त्र पुराण आगम सब
ओखली में कूटे हुए
खुद्दी हैं भूसी हैं ।
तो हे बंधु ! इन्हें क्या कूटना ?
इधर-उधर बहते मन का आर-पार जानूँ तो
वहाँ दीखेगा नितांत शून्य ही शून्य,
हे चन्नमल्लिकार्जुन !

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(६)

जगत् की क्रिया के लिए जैसे सूर्य ही बीज बना
वैसे इन्द्रियों की क्रिया के लिए मन ही बीज है
एक ही तो है मन मेरे संग
और सो भी तुम्हारे पास है धरोहर
तो क्या मेरे लिए यह भव संभव है ?

(७)

तोड़कर विषदंत सर्प का खेल यदि सको उसके साथ
तो अच्छा होगा सर्प का संग
काय-विकार निकाल काय का अस्तित्व हो
तो काय का संग ही बेहतर है
काय-विकार ठीक वैसे ही है जैसे
माँ बन जाती हो राक्षसी
हे प्रभु चन्नमल्लिकार्जुन ! तुम जिन पर रीझोगे
वे तो कच्चे नहीं पक्के हैं ।

(८)

गंगा की धारा के साथ खेलने को गये
पर्वत और पहाड़ की दुर्दशा देखो
अग्नि के साथ खेलने को गये
काठ की दुर्दशा देखो

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्योति के साथ खेलने को गये
तम की दुर्दशा देखो
ज्ञानी के साथ खेलने को गये
अज्ञान की दुर्दशा देखो
ऐसे ही जंगम और लिंग के साथ खेलकर
मेरे भवादिभवों ने जो दुर्दशा पाई,
उन्हें देखो हे चन्नमल्लिकार्जुन।

(९)

आकाश की गहनता को जानता है चंद्रमा
अंबर में उड़ती चील
जान सकती है क्या उसकी गहनता को?
नदी की गहराई को जानता है पंकज
क्या तट पर उगा मोथा
जान सकता है उसकी गहराई को?
पुष्प का परिमल जानता है मधु
बाहर मँडराता हुआ कीट
क्या जान सकता है उस परिमल को?
हे चन्नमल्लिकार्जुन अपने शरणों की महिमा
को जानते हो केवल तुम
भैंस पर बैठा मसक क्या जाने उसे?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१०)

रेशम का कीट जैसे बनाता घर
अपने ही स्नेह से और
अपने ही सूत में बंधकर मर जाता है
वैसे ही चाहता है जो भी मेरा मन
उसी के पीछे पड़कर मैं जल रही हूँ।
दूरकर मन की दुराशा को
दिखाओ पथ अपना हे चन्नमल्लिकार्जुन !

(११)

पेड़ की रगड़ से जो आग निकली पेड़ से
उसने जला दिया चारों ओर के पेड़ पौधों को।
आत्मा-आत्मा के मंथन से निकला जो अनुभाव
उसने जला दिया शरीर के सहजगुण को।
अतएव अपने महानुभावियों का अभाव दिखाकर
अपने में अपना लो मुझको हे चन्नमल्लिकार्जुन !

(११)

देखा वह दिव्य रूप मैंने
दीप्त अरुण जटाजूट, मणिमुकुट
शुभ्रदंत पंक्ति मंदस्मित खचित मुखारविंद
कर रहे भासित नयनज्योति से चौदह भुवन।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिन्हें देख सो गई सदा के लिए नयनों की भूख
देखा उस वीर पुरुष को
जो पुरुषों को बनाकर स्त्री
उन पर करता है शासन
जगत की आदि शक्ति से एक हो
जो कर रहा लीला
पाकर उस परमगुरु चन्नमल्लिकार्जुन को
धन्य समझा अपने को मैंने ।

(१३)

बाल खुले हैं, कुम्हलाया है वदन
विगलित हो गया है शरीर
क्यों बतियाते हो मुझसे हे बंधु !
क्यों तंग कर रहे हैं पितृगण !
चलागया बल सब, नष्ट हो गया भव
चली गई है सारी इच्छा शक्ति
बन गई भक्तिन मैं
तुमसे होकर एकाकार हे चन्नमल्लिकार्जुन !
अपनी जात पांत और कुल सब
मिटा चुकी हूँ मैं ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१४)

हाथ का धन तो ले सकता है कोई
पर शरीर का धन ले सकता है क्या ?
वस्त्र आभूषण छीने जा सकते हैं बल से
जो निर्वाण ढँके है मुझे
कोई छीन सकता है बल से क्या उसको ?
छोड़ दिया है लज्जा का भाव
पहन लिया है प्रकाश चन्नमल्लिकार्जुन का
अरे मूर्ख ! वस्त्र या आभूषण का
बंधन फिर क्या ?

(१५)

वस्त्र के हट जाने पर
लाज से भर जाते हैं स्त्री पुरुष
तुम स्वामी हो प्राण के
सर्वत्र व्याप्त हो जगत में
एक कण भी नहीं जहाँ तुम हो न व्याप्त
तब कहाँ है वह स्थान जहाँ लज्जा है ?
हे चन्नमल्लिकार्जुन ! सारा जग
आँख बनकर देख रहा मुझको
कैसे ढँक सकती या छिपा सकती स्वयं को ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१६)

जानकर तुम्हें यदि नरक भी मैं पाऊँ
तो मोक्ष ही है वह जानो
जाने बिना तुम्हें यदि मिली मुक्ति भी
तो वह नरक ही है जानो
तुम्हें जो सुख पसंद नहीं
वह दुःख ही है मुझे जानो
तुम जिस सुख पर रीझोगे
वह मुझे परम सुख है जानो
हे प्रभु चन्नमल्लिकार्जुन !
तुम्हारे बनाए-बिगाड़े बंधन को ही
मैं बंधनहीन समझूँगी ।

(१७)

गिरने से चिनगारी के
सोचूँगी, शांत हो गई भूख और प्यास ।
फट जाने से आकाश के
सोचूँगी, कर लिया पूरा स्नान ।
गिरे यदि पहाड़ मुझ पर
सोचूँगी, फूल की झड़ी है यह ।
हे चन्नमल्लिकार्जुन ! कटकर गिर जाने से सिर
सोचूँगी, मेरे प्राण समर्पित हुए तुम्हें ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१८)

बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा ?
सौतेली माँ क्या जाने लाड़-प्यार ?
जिसने न भोगा कैसे समझेगा भोगा दुःख ?
हे चन्नमल्लिकार्जुन ! भोंक दी है तुमने जो छुरी
टूट गई है वह मेरे शरीर में ही
बेचैन हूँ मैं उस व्यथा से
जानोगी उसे तुम कैसे ओ माँ !

(१९)

मन हुआ आकुल, उलट-पलट हुई बुद्धि
मृदु मंद पवन बन गया ज्वाला
जुन्हाई बन गई तेज घाम हे सखि !
नगर-नगर गाँव गाँव घूम रही अकेली वैसे
जैसे कोई कर उगाहनेवाला ।
उससे कहो हे माँ ! कि वह उसे समझे ।
ओ माँ उसे लाओ यहाँ
हे प्रभु चन्नमल्लिकार्जुन ! बुलाओ
उस अँतरिया क्रोधवाले को ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२०)

लपटहीन आग में भुन गई ओ माँ !
घावहीन घाव में तड़पी मैं ओ माँ !
पीड़ित हूँ मैं, कोई सुख नहीं ओ माँ !
चन्नमल्लिकार्जुन पर रीझकर
जन्म लिया है भवसागर में
जहाँ जन्मना नहीं था मुझे ।

(२१)

दूसरे पुरुष मेरे लिए पृथ्वी के काँटे हैं ओ माँ
उन्हें न तो छू सकती हूँ
न उनके साथ चल सकती हूँ ।
बात कर सकती नहीं उन पर करके विश्वास ।
चन्नमल्लिकार्जुन को छोड़
अन्य सब पुरुषों की छाती पर काँटे हैं
कैसे आलिंगन करूँ उन्हें ?

(२२)

सुन री बहन सुन री बहन
स्वप्न एक देखा है मैंने ।
चावल, सुपारी, नारियल देखा ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छोटी-छोटी जटायुक्त शुभ्रदंतपंक्तिवाला
गोरवाँ भिक्षार्थ आते देखा
पास आया मेरे, भर दिया उसने मुझे
और चला गया पहुँच के परे
मैंने चन्नमल्लिकार्जुन को देखा
और मेरी आँखें खुल गईं।

(२३)

मृत्यु नहीं और विनाश नहीं जिसका
वैसे सुंदर से गया है मुझे प्यार ओ माँ ?
अंत नहीं जिसका और न शून्य है
स्थान भी नहीं और चिन्ह भी नहीं।
वैसे सुंदर से हो गया है मुझे प्यार ओ माँ !
ओ माँ सुनो मेरी बात ओ माँ
जिसका भव नहीं, जिसे कोई भय नहीं,
वैसे निर्भय सुंदर से हो गया है मुझे प्यार ओ माँ
जाति कुल कोई नहीं जिसका
सीमा रहित सुंदर पुरुष से प्यार हो गया है
इसलिए जब चन्नमल्लिकार्जुन सुंदर ही है पति
अन्य पति जो मरते हैं, नाश को प्राप्त होते हैं
झोंक दो चूल्हे में उन्हें।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२४)

मरकत की फर्श, स्वर्ण का वंदनवार
हीरे का खंभा. प्रवाल का छप्पर
मोती-माणिक्य का वस्त्र आभरण
मेरा विवाह किया ।
मेरे प्रियजनों ने मेरा विवाह किया
लाकर कंकण और अक्षत
चन्नमल्लिकार्जुन नामक पति से
मेरा विवाह किया ।

(२५)

पिघले घी में और जमें घी में
क्या कोई अंतर है ?
दीपक और उसकी दीप्ति में
क्या कोई अंतर है ?
आत्मा और लिंग में
क्या कोई अंतर है ?
बदल दिया है गुरु ने शरीर को ही मंत्र में
और दिखलाया है
अंतर नहीं सावयव और निरवयव में कोई
देव चन्नमल्लिकार्जुन से होकर एकमेक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बन गई है पगली जो
उसे क्या समझायेंगे भला ?

(२६)

फल खा चुकने के बाद इसकी क्या चिंता
छीलता है कौन उसे ?
तज चुकने के बाद पत्नी को इसकी क्या चिंता
रखता है कौन उसे ?
छोड़ दिया भूमि को तो इसकी क्या चिंता
जोतता है कौन उसे ?
जान लिया चन्नमल्लिकार्जुन को
तो इसकी क्या चिंता
शरीर कुत्ते खायें
या समा जाय पानी में ?

(२७)

बनाकर पहाड़ पर घर
डरना क्या वन्य पशु से ?
बनाकर सागर तट पर घर
डरना क्या लहर और झाग से ?
बनाकर घर हाट में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लजाना क्या शोर-गुल से ?
सुनो हे चन्नमल्लिकार्जुन !
यदि हो स्तुति या निंदा
तो मन में कोप न लाकर
रहना चाहिए समाधानी ।

अल्लम प्रभु

(२८)

काया को बनाकर बाग
मन को बना कुदाल
खोदकर निकाल दिया भ्रांति की जड़
फोड़कर लौकिक ढेले
बोया मैंने ब्रह्म बीज ।
अखंड मंडल ही है कूप
पवन ही रहँटा है
पानी जा रहा है सुषुम्ना नाड़ी से,
पाँच बैल आकर उजाड़ दे न खेती को इसलिए
खड़ी की है समता-सहिष्णुता की चारदीवारी ।
जागृत रहकर सदैव उस बाग में
देखो हे गोहेश्वर !
रखवाली की है मैंने कोमल पौधे की ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२९)

सोना को माया कहते हैं पर सोना माया नहीं
नारी को माया कहते हैं पर नारी माया नहीं
मिट्टी को माया कहते हैं पर मिट्टी माया नहीं।
मन के सम्मुख की आशा ही माया है हे गोहेश्वर !

(३०)

अज्ञान के पालने में सुलाकर ज्ञान-शिशु
सकल वेदशास्त्र की बाँधकर डोरी
भ्रांति माँ लोरी गा झुला रही है पलना
जब तक नहीं टूट जाता पलना
जब तक नहीं छिन्न होती डोर
तब तक हे गोहेश्वर!
नाम रूपी लिंग दिखाई नहीं पड़ता।

(३१)

जान जानकर ज्ञान ही हो गया बाँझ
भूल भूल कर स्मृति ही हो गई बाँझ।
हे गोहेश्वर शब्द ही पूरा बाँझ हो गया।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(३२)

कसा जा सकता है कसौटी पर सोने को
पर क्या सोने का रंग कसा जा सकता है ?
लगाया जा सकता है जूड़े में फूल को
पर क्या पुष्प की गंध लगाई जा सकती है ?
करते जा सकते हैं कर्म तो बहुत सारे
पर क्या वस्तु को जाना जा सकता है ?
नाम ले सकते हो गोहेश्वर का तुम
पर हे सिद्धरामय्या ! स्वयं लिंग नहीं बन सकते ।

(३३)

शब्द कहूँ तो वह श्रोत्र का जूठन है
स्पर्श कहूँ तो वह त्वचा का जूठन है
रूप कहूँ तो वह नेत्र का जूठन है
स्वाद कहूँ तो वह जीभ का जूठन है
परिमल कहूँ तो वह घ्राण का जूठन है
इस जूठन का द्वैत मिट जाने पर
द्वैत के परे की ज्योति की ज्योति ही है गोहेश्वर ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(३४)

कहते है शब्द कलुषित है
क्या शब्द कहीं कलुषित हो सकता है
इसका मात्र संदेह ही कलुष है
हवा पर धूल का दूषण
क्या संभव हो सकता है ?
गोहेश्वर लिंग में वैसा भाव नहीं है
संगन बसवण्ण ।

(३५)

भव का शव पड़ा है सामने
खाने आये उसे श्वानवृंद ।
देखकर झगड़ते श्वान वृंद को
शव उठ खड़ा होकर हँस रहा है
गोहेश्वर रूपी लिंग वहाँ नहीं हैं ।

(३६)

प्राणलिंग के लिए सेज है काया ही
आकाश गंगा में ही स्नान
पूजा है पुष्पहीन परिमल से
हृदय कमल में है शिव शिव नामक शब्द
यही है अद्वैत देखो हे गोहेश्वर !

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(३७)

मैं देवता नहीं तो क्या तुम देवता हो
मेरा भरण पोषण नहीं करते क्यों ?
करते हुए तुम्हारी देखभाल
पानी पिलाऊँगा मैं तुम्हें प्यास लगने पर
भूख लगने पर
एक कौर प्रसाद का दूँगा
देखो हे गोहेश्वर मैं ही देवता हूँ।

(३८)

कपूर का पहाड़ जलने पर
बचेगा क्या कोयला ?
हिम के शिवालय के शिखर पर
रख सकते हैं क्या घाम का कलश
अग्नि के पर्वत पर फेंकें
यदि लाक्षा के बाण
तो क्या खोज सकते है उन्हें फिर ?
ज्ञान होने पर गोहेश्वर का
क्या मिल सकती है तुम्हारी स्मृति फिर ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(३९)

यदि हो अंगार की वृष्टि
पानी बन रहना है,
यदि हो जल प्रलय
वायु बन रहना है,
यदि हो महाप्रलय
आकाश जैसा रहना है,
यदि हो जगत प्रलय
अपने आपको निछावर करना है,
गोहेश्वर लिंग स्वयं होना है ।

(४०)

वायु जब सोने को हुई
आकाश ने गाई लोरी ।
शून्य के थका कहने पर
स्तन पान कराया निरालय ने ।
लुप्त हुआ आकाश
रुक गई लोरी
हे गोहेश्वर तुम हो ऐसे
जैसे नहीं हो ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४१)

तुम्हारा तेज देखने जाने पर
उदित होते दिखे शत कोटि सूर्य
प्रगट हुई विद्युलता की कौंध
मैं चमत्कृत हो गया ।

(४२)

स्फटिक के दीप की तरह
इसका न अंतर है न बाहर है
चकित हूँ मैं इस विचित्र चरित्र पर
दीखता है देखने से
पर छूने पर हाथ नहीं आता ।
पास होता है समीप जाने पर
अधिक पास आने पर ज़ाता है सरक
निगल लिया है निराकार को आकार ने
जकड़ गया है शून्य अपनी ही समाधि में
दर्शन मात्र से मिल गया अमृतान्न मुझे
होगा कितना सुंदर हे प्रभु गोहेश्वर !
इस से एक हो जाऊँ जो ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४३)

अर्घ्य तो लाया पर नहाना ही भूल गया
पुष्प तो लाया पर पूजा ही भूल गया
चावल तो लाया पर अर्पण ही भूल गया
लिंग को देखकर अपने को भूले हुए को
महाघन ने समा लिया अपने में ।

(४४)

कहाँ आम का पेड़
और कहाँ कोयल ?
कहाँ और कैसे इनका संबन्ध हुआ ?
कहाँ पर्वतीय आमलक
और कहाँ सागर का लवण
कहाँ और कैसे इनका संबन्ध हुआ ?
कहाँ गोहेश्वर और कहाँ मैं
कहाँ से और कब हमारा संबन्ध हुआ ?

(४५)

बहती नदी का सारा शरीर ही पैर है
जलती अग्नि का सारा शरीर ही मुख है ।
बहते पवन का सारा शरीर ही हाथ है
इसलिए हे गोहेश्वर ! तुम्हारे भक्त का
सर्वांग शरीर ही लिंगमय है ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४६)

पत्थर में जैसे होती है आग
जल में जैसे प्रतिबिंब
बीज में जैसे वृक्ष
शब्द में जैसे निश्शब्दता
यह है हे गोहेश्वर !
संबन्ध तुम्हारा और भक्त का ।

(४७)

अन्न का दान दें, सच बोलें
पौशाला बनायें, खोदें तालाब
तो इनसे मृत्यु के बाद मिलेगा स्वर्ग,
पर प्राप्त नहीं कर सकते
शिव से साक्षात्कार ।
जिसने जान लिया है गोहेश्वर को
उस शरण को मिलता नहीं कोई फल ।

(४८)

चित्र का रूप तो आँक सकते हैं
पर क्या प्राण फूँक सकते है उसमें ?
दिव्य आगम के बताये मार्ग पर चल सकते हैं

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर क्या भक्ति बना सकते है ?
प्राणवान भक्ति में तन्मय हो तुम
जहाँ गुण हैं ये वहाँ तुम हो
नहीं हैं जहाँ ये वहाँ तुम नहीं हे गोहेश्वर !

(४९)

एक बार दिखादो मुझे हे गोहेश्वर उसे
जिसने काट डाली है नयन की डोर पूरी
जिसने भून डाला है मन के तत्व को
और जो जानता है शब्द के मूल को ।

(५०)

आशा के लिए मर गये करोड़ों लोग
लिप्सा के लिए मर गये करोड़ों लोग
स्वर्ण, नारी, भूसंपदा के लिए मर गये करोड़ों लोग
पर, तुम्हारे लिए हे गोहेश्वर !
मैंने एक को भी नहीं देखा मरते ।

(५१)

पहाड़ यदि ठंडक का अनुभव करेगा तो
उसे ओढ़ाना क्या ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शून्य यदि नग्न रहेगा तो
उसे पहनाना क्या ?
भक्त यदि हो जाय नास्तिक तो
उसकी उपमा क्या होगी हे गोहेश्वर !

(५२)

चढ़ना नहीं जानते जो दिये गये घोड़े पर
फिर भी माँगते है दूसरा घोड़ा ।
तब न वे वीर है न धीर ।
घोड़े की काठी को लादकर कंधे पर
भटक भटक थक रहे तीनों लोक में
वे कैसे जानें गोहेश्वर नाम का लिंग ।

(५३)

पत्थर का बनाकर घर
बनाकर देव पत्थर का
पत्थर पर रक्खोगे दूसरा पत्थर
तो देवता कहाँ जायेंगे ?
पत्थर के लिंग की प्रतिष्ठा करनेवाला
हे गोहेश्वर ! रौरव नरक जाना है ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(५४)

तालाब और मंदिर तो केवल
पीछे छोड़े गये पदचिन्ह हैं
कर्मकांड और योग
जन्ममृत्यु के आलिंगन में बंधे हैं ।
भूत और भविष्य के सूत्र को
छिन्न कर हे सिद्धरामय्या !
एक हो जाओ गोहेश्वर लिंग के साथ ।

बसवण्ण

(५५)

धनवालों ने बनाये शिवालय
मैं गरीब क्या बना सकता हूँ ?
मेरे पाँव ही खंभे हैं
देह ही मन्दिर है
सिर ही स्वर्ण कलश है ।
सुनो हे कूडलसंगम देव !
स्थावर का तो हो सकता है नाश
पर जंगम का नाश नहीं होता ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(५६)

चकोर की चिंता चंद्र के प्रकाश की
कमल को चिंता सूर्य के उदय की
भ्रमर को चिंता परिमल के मधु की
मुझे हे कूडलसंगमदेव ! तुम्हारी ही चिंता है।

(५७)

गृहस्वामी घर में है या नहीं ?
घर की देहली पर उगी घास,
भीतर है धूल ही धूल
गृहस्वामी घर में हैं या नहीं ?
शरीर में भरी है मिथ्या, मन में विषय भरा है
हे कूडलसंगमदेव !
गृहस्वामी घर में नहीं है।

(५८)

शब्दों में भरकर नामामृत
नयनों में भरकर तुम्हारी मूर्ति
मन में भरकर तुम्हारी स्मृति
कान में भरकर तुम्हारी कीर्ति
कूडलसंगमदेव ! तुम्हारे चरणकमल पर
समर्पित भ्रमर हूँ मैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(५९)

आग लगे यदि चूल्हे में
तो भी टिका जा सकता है वहाँ ।
किंतु आग लग जाय धरती में ही
तो क्या टिक सकते हैं ?
बाँध ही पीने लगे पानी तालाब का
मेड़ ही खेत की फसल को खाने लगे
गृहिणी चोरी करने लगे अपने ही घर में
माँ की छाती का दूध ही यदि हो जाय विष
तो किससे शिकायत करोगे
हे पिता कूडलसंगमदेव !

(६०)

दूसरे की चिंता क्यों करना हे बंधु !
अपनी ही चिंता क्या कम है ?
कूडलसंगमदेव होंगे प्रसन्न या अप्रसन्न,
यही चिंता ओढ़ने बिछाने को काफ़ी है ।

(६१)

मन खुश रहता है
अपनी चाही बात कहने पर ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूसरों की चाही बात करो
तो मन खुश नहीं रहता।
कूडलसंगमदेव के शरण को
जो करे न विश्वास
और न सम्मान
उस मन को चूल्हे में झोंक दो।

(६२)

मन के मैल को पिघला कर दूर करो,
फिर कसो कसौटी पर
और आग में डाल
देखो की वह शुद्ध हुआ कि नहीं
पीट पीटकर बनाओ नूपुर मुझे
अपने शरण के पैरों के लिए
हे कूडलसंगमदेव रक्षा करो मेरी।

(६३)

जगत् को घेर रक्खा है तुम्हारी माया ने
मेरे मन ने तुम को घेर रक्खा है।
शक्ति शाली हो तुम संपूर्ण जगत् से
और मैं तुमसे भी अधिक शक्तिशाली हूँ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बंदी बना हो जैसे हाथी एक आयने में
वैसे ही मेरे भीतर तुम हो गये बंदी
हे प्रभु कूडलसंगमदेव ।

(६४)

कुम्हड़े को लोहे के चौखटे में बाँधने से
सड़ना छोड़कर क्या वह अमृत बनेगा ?
ओछी प्रकृतिवाले को दीक्षा देने से
क्या वह भक्ति करेगा ?
हे प्रभु कूडलसंगमदेव !
इस मनहीन का कैसे
अंगऊँ दूँ तुम्हें ?

(६५)

सर्प की वक्रता वल्मीक के लिए सीधी है
नदी की वक्रता समुद्र के लिए सीधी है
हे कूडलसंगमदेव ! शरण की वक्रता
लिंग के लिए सीधी है ।

(६६)

इसके पहले कि पकें बाल

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और पड़ें झुर्रियाँ
इसके पहले कि शरीर हो जाय शून्य नीड़
और दांत गिर जाय
इसके पहले कि रीढ़ बन जाय धनुष जैसी
और तुम हो अन्य पर आश्रित
इसके पहले कि पाँव पर हाथ टेक
तुम पकड़ो लाठी
इसके पहले कि बुढ़ापा बिगाड़ दे रूप को
और मृत्यु का हो स्पर्श
पूजा करो बंधु ! कूडलसंगमदेव की।

(६७)

बावी को पीटने से
मरेगा क्या भीतर का साँप ?
घोर तप करने का अर्थ क्या है ?
अंतरंग आत्मशुद्धि विहीन है जिनका
उनपर कूडलसंगमदेव
विश्वास करेंगे कैसे ?

(६८)

प्रेम के विना पूजा
स्नेह के बिना कार्य

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसी पूजा ऐसा कार्य
चित्रलिखित रूप के जैसे हैं
चित्रलिखित ईख के जैसे हैं
उसे जकड़कर पकड़ने से नहीं मिलता सुख
चूसने से नहीं मिलेगी मिठास
हे कूडलसंगमदेव ! जो भक्ति में निष्ठावान् नहीं
उसकी भक्ति ही ऐसी है ।

(६९)

जहाँ भी मिला पानी लगाते है डुबकी
जहाँ भी मिला वृक्ष परिक्रमा करने लगे ।
सूखनेवाले पानी पर
सूखनेवाले पेड़ पर
जो विश्वास करेंगे
वे क्या जाने तुम्हे कूडलसंगमदेव !

(७०)

पत्थर का नाग देखने पर
कहते हैं चंढाओ दूध इस पर ।
पर असली नाग देखने पर
कहते है 'मार डालो उसे.'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भोजन के इच्छुक जंगम के आने पर
दिखाते हैं दूसरा दरवाजा
लेकिन जो कभी खा न सके
उस लिंग को चढ़ाते हैं नैवेद्य।
कूडलसंगमदेव के शरण को देख
जो उदासीनता दिखाते हैं
वे मिट्टी के ढेले के जैसे
पत्थर से हैं टकराते।

(७१)

यदि तुम बोलो तो मानो वह मोती की माला हो
यदि तुम बोलो तो मानो वह माणिक्य-दीप्ति हो
यदि तुम बोलो तो मानो वह स्फटिक-शलाका हो
यदि तुम बोलो तो वह पसंद होना चाहिए ईश्वर को
पर यदि करनी तुम्हारी नहीं है कथनी जैसी
तो तुम्हें कैसे करेंगे प्यार कूडलसंगमदेव !

(७२)

हम उनपर क्यों कोप करें
जो कोप करें हम पर।
उससे होगा क्या हमारा लाभ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

या उनकी होगी क्या क्षति,
तन का कोप करता है नाश बड़प्पन का
मन का कोप करता है नाश ज्ञान का
हे कूडलसंगमदेव प्रभु !
घर की आग पहले घर को ही जलाती है
न कि जलाती है पड़ोसी का घर।

(७३)

साँप से डँसे आदमी से करा सकते है बात
ग्रहग्रसित आदमी से करा सकते हैं बात
किंतु धनमद से पीड़ित आदमी से
बात करा कसते नहीं।
पर यदि दारिद्र्य का जादूगर
प्रवेश करे उनके घर में
तो वह तत्काल बोल पड़ेंगे।

(७४)

मर्त्यलोक कर्तार की टकसाल है
जो सिक्का चलता है यहाँ
वह चलता है वहाँ भी
पर हे प्रभु कूडलसंगमदेव !

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो यहाँ नहीं निभा पाते
वे वहाँ भी निभा नहीं पाते ।

(७५)

उसकी बात मीठी है गुड़ जैसी
पर उसके हृदय में
जो है सब विष है
आंख से बुलाती है वह किसी एक को
सोचती है दूसरे को मन में
वचन से बंधी है किसी और से
ऐसे उसका तन कहीं पर है
मन कहीं और, और वचन कहीं और है ।
मन की चोरनी को अपना कर विश्वास करनेवाले
भेड़ जैसे लोगों को क्या कहें
हे प्रभु कूडलसंगमदेव !

(७६)

पुत्रवती वेश्या पैसे के लोभ में
घर में बुलाये नये पुरुष को ।
न प्राप्त होती है बच्चे को
और न पुरुष ही भोग पाता है उसे ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक ओर थोड़ा थपपाती हैं बच्चे को
करती है शयन पुरुष के साथ दूसरी ओर
कभी नहीं छूटता धन का लोभ
हे कूडलसंगमदेव !

(७७)

मेरे शरीर को बनाओ अपनी वीणा का दंड
मेरे सिर को बनाओ उसका तूँबा
मेरी नसों को बनाओ तार
और अँगुली को बनाओ मिजराब
मुझे जकड़ लो अपनी छाती से
और बजाओ बत्तीस राग
हे प्रभु कूडलसंगमदेव !

(७८)

जो करता है वह मैं नहीं
जो देता में वह मैं नहीं
जो माँगता है वह मैं नहीं
तुम्हारी दया के बिना कुछ नहीं होता हे प्रभु !
दासी को ज्वर आने पर
जैसे गृहिणी को करना पड़ता है घर का काम

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वैसे ही तुम सब काम स्वयं कर लो
हे कूडलसंगमदेव !

(७९)

नाचते नाचते मेरे पाँव नहीं थकते
देखते देखते मेरे नेत्र नहीं थकते
करते करते तुम्हारा यशगान
जिह्वा नहीं थकती ।
क्या कहूँ मैं ?
अपने दो हाथों से पूजने पर भी
मन नहीं भरता मेरा
क्या कहूँ मैं ?
सुनो हे कूडलसंगमदेव !
हो गया इतना अधीर मैं
फाड़कर तुम्हारा उदर
घुस पड़ूँगा मैं उसमें ।

(८०)

पर्व के लिए लाया गया मेड़ा
खा रहा है तोरण के लिए लाये पत्तों को ।
जानता नहीं वह अभी मर जायेगा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाहता है पालना वह अपना पेट
जन्म का ही दिन है उसके मरण का दिन भी
पर हे प्रभु कूडलसंगमदेव !
जो देंगे बलि उसको
क्या वे बच पायेंगे ?

अंबिगर चौडय्या

(८१)

निरंतर बहती नदी में
जिसमें न बाँध हैं, न पानी रुकता है,
कायाहीन केवट बन आया मैं ।
बंधन या मोक्ष के कारण
अपने मन का ही यदि खेवा दो
पहुँचा दूँगा तुम्हें महानदी के पार
रख दूँगा तुम्हें अंबिगर चौडय्या
उस विश्वहीन निस्सीम ग्राम में ।

(८२)

दरिद्र को खाने की चिंता है
पेट भरने पर वस्त्र का चिंता है
वस्त्र मिलने पर बचत की चिंता है

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बचत होने पर पत्नी की चिंता है
पत्नी होने पर बच्चों की चिंता है
बच्चे होने पर उनके जीवन की चिंता है
जीवन के होने पर कष्टों की चिंता है
कष्ट आने पर मरण की चिंता है
उस तरह देखा मैंने असंख्य लोगों को
असंख्य चिंता में जीते
परंतु नहीं देख पाया एक को भी
जिसे चिंता है शिव की
अंबिगर चौडय्या ही सचमुच का शरण है।

(८३)

लगा है यदि कोई कायक में
तो भूल सकता है गुरु दर्शन
भूल सकता है शिव की पूजा भी।
भूल सकता है तोष जंगम साधु का।
कायक है स्वयं श्री श्री कैलाश
कायक में हीं है अमरेश्वर का निवास।

(८४)

जल को कभी क्या लगती है प्यास ?
क्या अमृत को सताती है क्षुधा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परम पुरुष को क्या विषय सताता है ?
सद्गुरु की करुणा पाकर
महाशरण करता जों लिंगार्चन
उसको क्या मोक्ष की इच्छा है ?
मुक्ति उनके लिए है स्वयंभू, सहजस्वभाव
इसके बाद खोजेगा क्या कोई
तृप्ति और सुख
हे उरिलिंगपेद्दिप्रिय विश्वेश्वर !

(८५)

गहरे पाताल में बहते पानी को
डोरी या सोपान के बिना
क्या ऊपर लाया जा सकता है ?
पुरातन शरणां ने बनाया शब्द सोपान
और दिखाया पथ देवलोक का देखो बंधु ।
कूडलचन्नसंगमदेव के शरणोंने
मर्त्यलोक के जन के मन के मैल को हटाने को
जलाया गीतशब्द का दीपक ।

(८६)

वृक्ष के अंदर की अग्नि जला रही वृक्ष को हे प्रभु !
वृक्ष खड़ा जलता रहा ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नीचे की मिट्टी स्वयं ही थसक गिर गई
और आग बुझ गई अपने आप ही
स्वयं प्रकाश पत्ते रह गये बिना जले
अग्निशिखा आकर मेरी हथेली में समा गई
देखकर उसे पड़ गया आश्चर्य में मैं
हे बसवप्रिय कूडलचन्नबसवण्ण !

(८७)

विवेक ही गुरु है
आचार ही शिष्य है
ज्ञान ही लिंग है
तृप्ति ही तप है
समता ही योग है
जानते इतना भी नहीं यदि तुम
सिर मुड़ाने से फिर क्या लाभ ?
इस पर तो हँसेंगे
महालिंग कल्लेश्वर देव !

(८८)

जब नहीं था आदि अनादि
जब नहीं था शून्य महाशून्य

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब नहीं था साध्य असाध्य
जब नहीं था रूप अरूप
जब नहीं था स्थूल सूक्ष्म
जब नहीं था साकार निराकार
जब हीं हुआ था जन्म वाक् का
जब नहीं था द्वैत अद्वैत
जब नहीं थे शंकर शशिधर
गणाधीश्वर जैसे ईश्वर
जब नहीं था वर्तन निवर्तन
जब नहीं हुआ था विवाह उमा हैमवती का
जब नहीं था नाम किसी का
और नहीं थी सीमा
हे कलिदेव प्रभु ! तब
तुम थे ऐसे जैसे शब्द ही स्तब्ध हो गया हो ।

(८९)

ज्ञान को रखकर गले में
मर्त्यलोक कर रहा जुगाली उसकी ।
ज्ञान स्वयं नहीं जानता जियें कैसे
सारा जग ही नाश हो रहा है ।
बोलो हे बंधु ! जिऊँगी मैं कैसे ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संशय से भरी देख रही मैं
आधा प्रकाश और आधा अंधकार
हे भाई अजगण्ण ! तुम्हारे योग ने
मेरी आँखों पर पट्टी बांधकर
आइना दिखाया ।

(९०)

उस कुएँ को क्यों चाहिए सीढ़ी
जिस पर गिरी हो बिजली ?
पूर्ण ज्ञान होने के बाद
क्या मन मुड़ सकता है लोभ की ओर ?
जिस घर में जल रहा है दीपक
अंधकार कहाँ है वहाँ ?
एक हो जाने पर अपने आपमें हे अजगण्ण !
प्रश्न ही नहीं उठता
ब्रह्म अथवा परब्रह्म का ।

(९१)

पानी की गुड़िया के पावों में बांध
निराले का घुंघरू
खेलने को देकर शून्य की गुड़िया को हाथ में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दुलार रहा है उस गुड़िया को
कर्पूर की मूर्ति को दिया
अग्नि का सिंहासन
अग्नि ही पिघल गई
ज्यों का त्यों रह गया कर्पूर
उसे देखकर मैं हूँ चकित हे बंधु
यही है योग अजगण्ण ।

(९२)

मन ने धन को निगल लिया
धन को निगल लिया मन को
मन और घर दोनों को
निगल लिया ब्रह्म ने
मेरा मैं कहां गया
हे प्रभु अखंडेश्वर !

(९३)

अंतरंग में अनुभव कर अखंड परिपूर्ण ज्ञान
बहिरंग में सत्य सदाचार को उतार कर जीवन में
गिर्मूलकर शंका भूत और भविष्य की
देह ही बन गया आनंद
अभेद्य लिंग की ज्योति में जगमगाते

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उन अप्रमाण शरणों को दिखाकर
रक्षा करो मेरी हे अखंडेश्वर !

(९४)

करनी में कथनी समाकर
कथनी में करनी समाकर
करनी कथनी दोनों में परिपूर्ण को समाकर
एक हो सके जो लिंग के साथ
शरण वही है देखो हे अखंडेश्वर !

(९५)

परम महालिंग के लिए
मन ही पीठ है
शरीर ही शिवालय है
स्मरण ही पूजा है
ध्यान ही तृप्ति है
डूब जाय जैसे पूर्णकुंभ अंबुधि में
वैसे ही समाकर
तुम्हारी अविरल दिव्य महाज्योति में
भूलकर मैं और तुम के अंतर का चिह्न
मैं नहीं जान पाया कुछ भी हे अखंडेश्वर !

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(९६)

गर्भस्थ शिशु जानता नहीं माँ का मुँह
माँ भी नहीं जानती शिशु का रूप
माया मोह में लगे भक्त
जानते नहीं ईश्वर को।
और हे रामनाथ! वह ईश्वर भी
जानता नहीं उन्हें।

(९७)

जलते अंगार पर रखें अगर तिनका
जैसे अंगार उस तृण को निगल जाता है
वैसे गुरु चरण पर शरीर रूपी तिनका रखने से
उसके सर्वांग लिंग बनेंगे, हे रामनाथ!

(९८)

अग्नि जला सकती है पर चल नहीं सकती
वायु चल सकती है पर जला नहीं सकती।
विना वायु के अग्नि
जल नहीं सकती एक पग भी।
क्रिया और ज्ञान के भेद को
लोग जान पायेंगे कैसे हे रामनाथ!

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(९९)

यदि गोल स्तन और लंबे केश हैं
तो वह नारी है ।
यदि मूँछ और दाढ़ी है
तो वह नर है ।
जो भीतर संचार करती है आत्मा
वह न नारी है न नर है
उसे देखो हे रामनाथ !

(१००)

जिसने किया है धारण शरीर
लगती है भूख उसे ।
जिसने किया है धारण शरीर
बोलता है वह मिथ्या
कठिन वचन मत बोलो हे प्रभु रामनाथ !
इसलिए कि एक शरीर है मेरे ।
एक बार धारण करके तो देखो
मेरे जैसा शरीर ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१०१)

जब आता है संकट ओ प्रभु शिव !
स्मरण करता हूँ तुम्हें ।
कट जाता है जब संकट
नहीं देख पाते तुम्हें वे
चाहे तुमको ठोकर लग जाय उनकी
देखो हे रामनाथ !

JAGADGURU VISHWARADHYA
JNA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ......8225......

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi